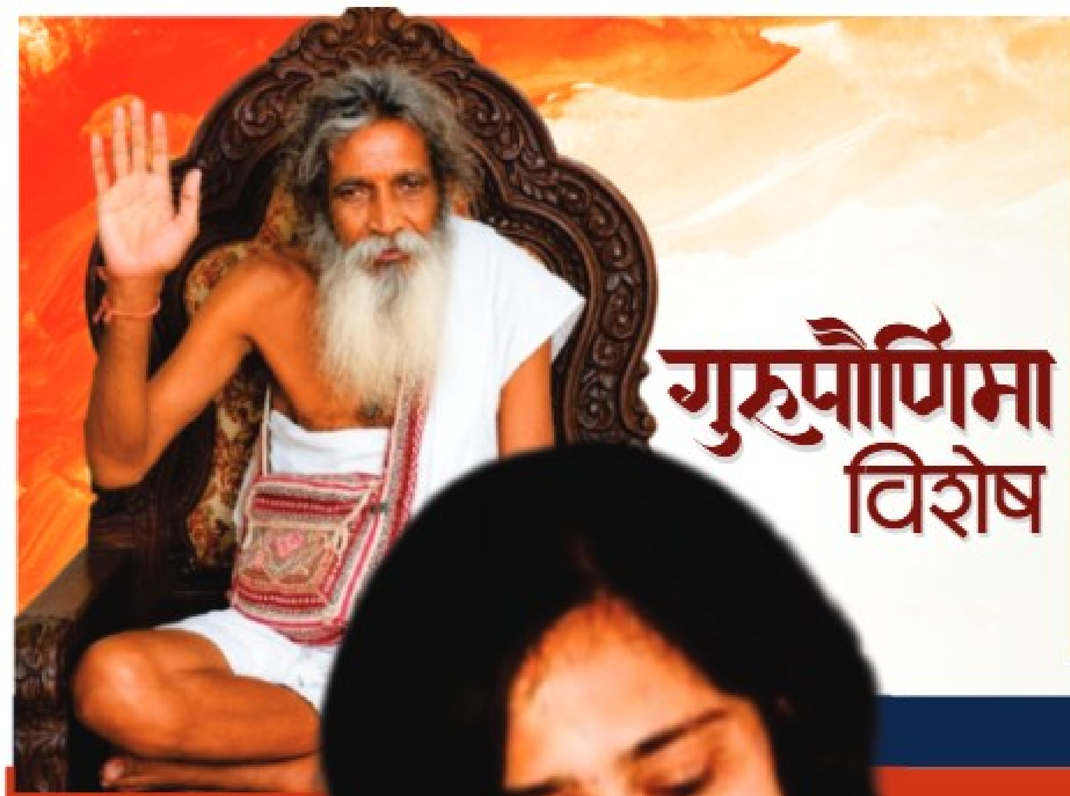

पोस्टल रजि.नं. ATI/RNP/268/2025-2027
RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

विदर्भ स्वाभिमान

संपादक : सुभाषचंद्र जे. दुबे

प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

अमरावती । गुरुवार दि.२३ से २९ जुलाई २०२६ | गुरुपौर्णिमा विशेषांक | वर्ष १७ । अंक ०९ । पृष्ठ ८ । मूल्य १०रु.

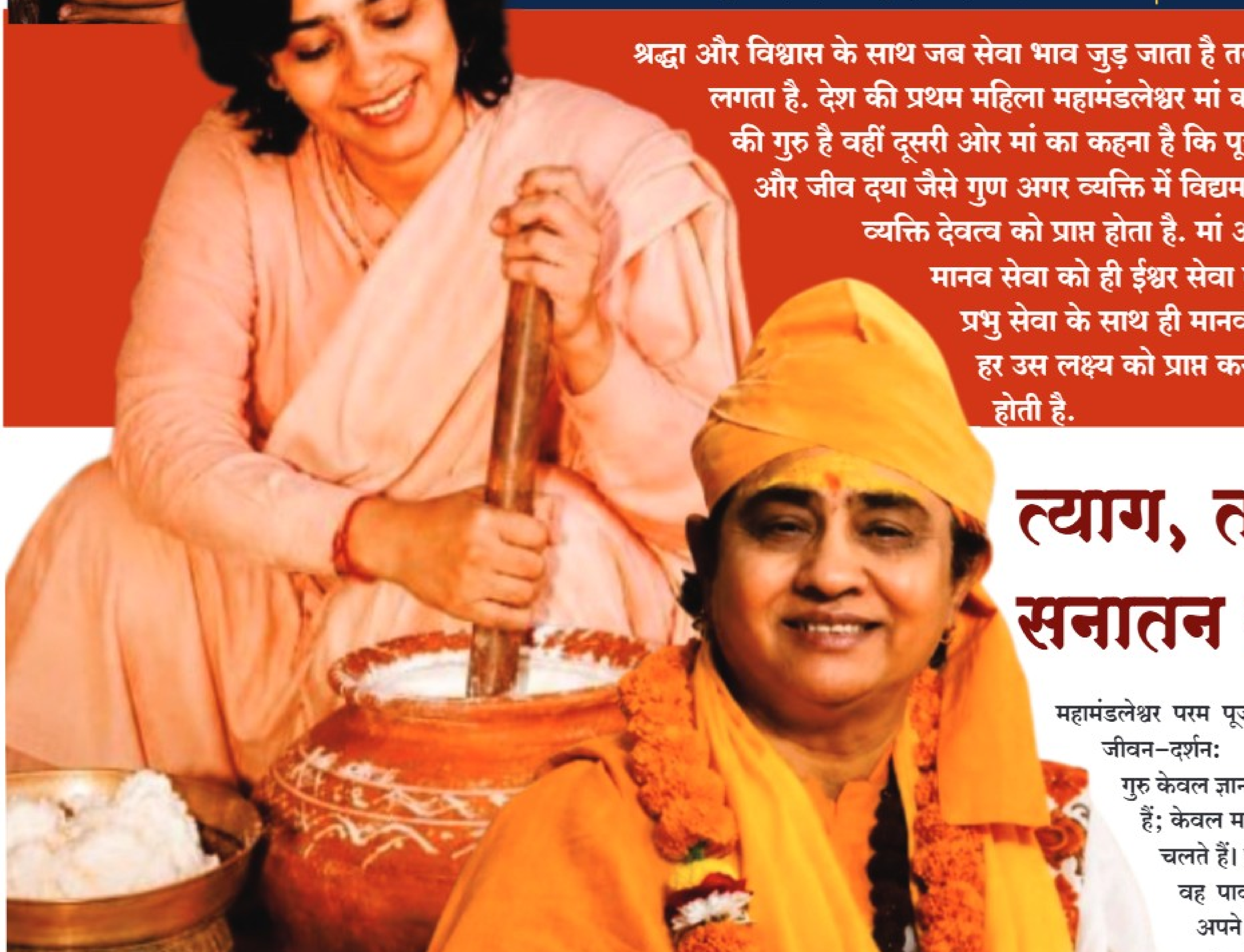

श्रद्धा और विश्वास के साथ जब सेवा भाव जुड़ जाता है तब मानव में ही दैवत्व नजर आने लगता है. देश की प्रथम महिला महामंडलेश्वर मां कनकेश्वरी देवी जहां लाखों भक्तों की गुरु है वहीं दूसरी ओर मां का कहना है कि पूजा अर्चना के साथ मानव सेवा और जीव दया जैसे गुण अगर व्यक्ति में विद्यमान है तो मिश्रित तौर पर वह व्यक्ति देवत्व को प्राप्त होता है. मां अपनी कथा और सत्संगो में भी मानव सेवा को ही ईश्वर सेवा बताती हैं. उनका मानना है कि प्रभु सेवा के साथ ही मानव सेवा करते हुए हम कामयाबी के हर उस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं, जिसकी हमें चाहत होती है.

जीवन में गुरु ही जीवन को तारते और संवारते भी है. उनका आशिर्वाद मिलने के बाद परमात्मा की कृपा बरसती है और हमारे जीवन में कई ऐसी बाते होती हैं जिसकी हमें भी कल्पना नहीं होती है. जीवन में सदा गुरु का सम्मान करें.

त्याग, तप, सेवा और सनातन संस्कृति की सशक्त साधिका

महामंडलेश्वर परम पूज्या माँ कनकेश्वरी देवी जी का जीवन-दर्शन:

गुरु केवल ज्ञान नहीं देते, वे जीवन को दिशा देते हैं; केवल मार्ग नहीं बताते, स्वयं मार्ग बनकर चलते हैं। गुरु पूर्णिमा भारतीय संस्कृति का वह पावन पर्व है, जब समस्त श्रद्धालु अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता, श्रद्धा और समर्पण व्यक्त करते हैं। गुरु केवल शास्त्रों का ज्ञान देने वाले नहीं होते, वे आत्मा को जागृत करने वाले, जीवन को संस्कारित करने वाले और मानव को ईश्वर की ओर अग्रसर करने वाले दिव्य पुरुषार्थ के प्रतीक होते हैं। ऐसे ही संत-स्वरूप व्यक्तित्व की धनी हैं महामंडलेश्वर परम पूज्या माँ कनकेश्वरी देवी जी, जिनका संपूर्ण जीवन त्याग, तपस्या, साधना, सेवा और सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार को समर्पित रहा है। उनका जीवन केवल एक संत का जीवन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के आदर्शों का सजीव स्वरूप है।

बाल्यकाल से ही वैराग्य की अद्भुत चेतना:

गुजरात के मोरबी जिले में अवतरित माँ कनकेश्वरी देवी जी के हृदय में बचपन से ही अध्यात्म के संस्कार जागृत थे। वेद, पुराण, भगवान शिव की भक्ति तथा आध्यात्मिक चिंतन में उनकी सहज रुचि थी। जहाँ सामान्य बाल्यावस्था खेल-कूद में बीतती है, वहीं उन्होंने मात्र नौ वर्ष की अल्पायु में संसार का त्याग कर संन्यास का मार्ग स्वीकार किया। इतनी छोटी आयु में लिया गया यह निर्णय उनके भीतर जन्मजात वैराग्य और ईश्वर प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा का परिचायक है।

गुरु कृपा-जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि:

प्रत्येक साधना की सफलता गुरु-कृपा पर आधारित होती है। वर्ष १९८० में उनकी भेंट परम पूज्य सद्गुरु श्मशान के बादशाह बापूजी श्री केशवानंदजी महाराज से संपन्न हुई। सद्गुरु ने उनके जीवन को आध्यात्मिक दिशा प्रदान की।

माँ कनकेश्वरी देवी जी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व गुरु-भक्ति का अनुपम उदाहरण है। वे सदैव अपने सद्गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, विश्वास और समर्पण का संदेश देती हैं। गुरु परंपरा के गूढ़ सिद्धांतों की व्याख्या करने में उनकी विशेष अधिकारपूर्ण शैली उन्हें विशिष्ट बनाती है।

रामायण, श्रीमद्भागवत, देवीभागवत और शिवमहापुराण जैसे महान ग्रंथों की उन्होंने अत्यंत गहनता से प्रस्तुति समय-समय पर अनेकों बार की है। उनकी अद्भुत स्मरण शक्ति और शास्त्रों पर गहरी पकड़ के कारण मात्र सोलह वर्ष की आयु में उन्होंने अपनी पहली कथा प्रस्तुत की।

आज तक देश-विदेश में पाँच सौ से अधिक सफल कथाओं के माध्यम से उन्होंने लाखों श्रद्धालुओं के जीवन में धर्म, भक्ति और नैतिकता का प्रकाश पहुँचाया है। उनकी वाणी केवल कथा नहीं होती; वह जीवन जीने की कला, आत्मचिंतन और संस्कारों का सुंदर संदेश बन जाती है।

इतिहास में दर्ज एक गौरवपूर्ण उपलब्धि:

वर्ष २०१६ के उज्जैन सिंहस्थ महाकुंभ में उन्हें प्रतिष्ठित महामंडलेश्वर की उपाधि से विभूषित किया गया। वे पंच अग्नि अखाड़े की पहली महिला महामंडलेश्वर बनीं। यह सम्मान केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं था, बल्कि भारतीय संत परंपरा में नारी-शक्ति के गौरवपूर्ण योगदान का ऐतिहासिक प्रतीक भी बना।

धर्म केवल उपदेश नहीं-जीवन का व्यवहार:

माँ कनकेश्वरी देवी जी का जीवन इस सत्य को सिद्ध करता है कि धर्म समाज के प्रत्येक वर्ग तक सेवा के रूप में पहुँचना चाहिए।

उनके प्रेरणास्पद कार्यों में शामिल हैं:

* बालकाश्रम की स्थापना।
* वृद्धाश्रम की स्थापना।
* वेद विद्यालय की स्थापना।
* भक्तों के लिए निवास एवं निःशुल्क भोजन-प्रसाद की व्यवस्था।
* सामूहिक विवाहों का आयोजन।
* विभिन्न स्थानों पर अन्नक्षेत्र का संचालन।
* गौशाला का निर्माण एवं गौसेवा।
* वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण के अभियान।
* संत सम्मेलनों एवं त्रिवेणी कार्यक्रमों का आयोजन।

इन सभी कार्यों में उनका उद्देश्य सेवा के साथ संस्कारित समाज का निर्माण करना है।

आध्यात्मिकता का सरल स्वरूप:

आज अनेक स्थानों पर अंधविश्वास और चमत्कारों का आकर्षण देखने को मिलता है, किन्तु माँ कनकेश्वरी देवी जी का मार्ग इससे भिन्न है। वे किसी प्रकार के ताबीज या चमत्कार आधारित उपायों का प्रचार नहीं करतीं और न ही लोक-लुभावन मंत्रों का वितरण करती हैं। ईश्वर और सद्गुरु में असीम श्रद्धा लेकिन अंधश्रद्धा से पूर्णतः मुक्त है। वे सदैव शास्त्र, साधना, सदाचार, भक्ति और आत्मविश्वास के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं।

उनका स्पष्ट संदेश है-

जीवन का वास्तविक परिवर्तन बाहरी उपायों से नहीं, बल्कि अपने भीतर के परिवर्तन से होता है।

राजनीति से दूर, समाज के निकट माँ कनकेश्वरी देवी जी सदैव राजनीति से दूर रहकर समाज निर्माण के कार्यों में लगी रहती हैं। उनके लिए प्रत्येक व्यक्ति समान है। वे किसी पक्ष या विचारधारा से ऊपर उठकर मानवता, नैतिकता और सेवा को सर्वोच्च स्थान देती हैं।

सुदर्शन गांग
मो.९४२२१५६५२३

तपस्या, अनुशासन और ब्रह्मचर्य:

बालब्रह्मचारिणी के रूप में उनका सम्पूर्ण जीवन अनुशासन और तपस्या का उदाहरण है। गुजरात के गिरनार (जूनागढ़) पर्वत पर की गई उनकी कठोर साधना उनके आध्यात्मिक तेज का आधार है। उनका जीवन बताता है कि आध्यात्मिक ऊँचाइयाँ केवल अध्ययन से नहीं, बल्कि तप, संयम और निरंतर साधना से प्राप्त होती हैं।

संस्कृति संरक्षण का विराट संकल्प

मोरबी स्थित श्री खोखरा हनुमान हरिहर धाम केवल एक आश्रम नहीं, बल्कि संस्कृति, सेवा और साधना का जीवंत केंद्र है। यहाँ स्थापित १०८ फुट ऊँची हनुमानजी की भव्य प्रतिमा श्रद्धा का केंद्र है। साथ ही रामदरबार सहित अनेक देवी-देवताओं की सुंदर मूर्तियाँ भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की गरिमा को अभिव्यक्त करती हैं। यह स्थान धर्म, सेवा, संस्कार और भारतीय संस्कृति का संगम बन चुका है।

उनके जीवन-दर्शन का मूल संदेश:

* प्राणी मात्र की निस्वार्थ सेवा ही सच्ची साधना है।
* पवित्र जीवन ही परमात्मा की सबसे बड़ी पूजा है।
* लोग हमें जैसा अच्छा समझ रहे हैं वैसे बन जाएँ या फिर वास्तविकता में हम जैसे हैं वैसे प्रकट हो जाएँ।
* परमार्थ मानव जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।
* प्रमाद, पक्षपात और परिग्रह से सदैव दूर रहना चाहिए।
* गुरु के प्रति समर्पण ही आध्यात्मिक उन्नति का मूल आधार है।
* नैतिकता और संस्कार ही समाज की वास्तविक शक्ति हैं।

गुरु पूर्णिमा का संदेश:

गुरु पूर्णिमा केवल पूजा का पर्व नहीं, बल्कि गुरु के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प है। यदि हम माँ कनकेश्वरी देवी जी के जीवन से त्याग, सेवा, अनुशासन, साधना, पर्यावरण संरक्षण, गौसेवा, नैतिकता और मानवता के मूल्यों को अपने जीवन में स्थान दें, तो यही उनके प्रति हमारी सच्ची आस्था होगी। उनका जीवन हमें सिखाता है कि महानता पद या प्रसिद्धि से नहीं, बल्कि पवित्र चरित्र, सेवा और आत्मसमर्पण से प्राप्त होती है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि परम पूज्या सद्गुरु माँ कनकेश्वरी देवी जी का सुंदर उपदेश और आशीर्वाद समाज को निरंतर प्राप्त होता रहे तथा उनके द्वारा प्रज्वलित धर्म, सेवा और संस्कार का यह दिव्य दीपक आने वाली पीढ़ियों को भी आलोकित करता रहे।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।
जय माँ गिरनारी।

शुभेच्छुक-
सुदर्शन गांग
अरुण कडू
प्रदीप जैन
आनंद परिवार
बडनेरा,अमरावती

विशेष चिंतन

जीवन को दिशा देने वाली शक्ति

जीवन में माता-पिता को प्रथम गुरु कहा गया है. शास्त्रों में गुरु के महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि शास्त्र यहां तक कहते हैं कि अगर प्रभु शंकर जी धरती पर अवतार लेने तो उनका भी कल्याण बिना गुरु बनाई नहीं हो सकता है. मां कनकेश्वरी देवी अध्यात्म, सामाजिक सेवा और मानव सेवा की त्रिवेणी संगम है. उनका जीवन पूरी तरह से जहां भक्ति भाव से ओतप्रोत है, वहीं गुरु महिमा की साक्षात मूर्ति हैं. उनकी श्री राम कथाओं में भी गुरु महिमा पर ही वह बोलते हैं. उनका मानना है कि बिना गुरु के ज्ञान नहीं और बिना ज्ञान के जीवन कभी नहीं तर सकता है. उनके पूज्य गुरु केशव बापू भगवान भोलेनाथ के अनन्य भक्त थे और उनकी शिष्या के रूप में मां कनकेश्वरी देवी ने जिस तरह से भारत ही नहीं तो समूचे विश्व में सनातन धर्म के महत्व का प्रचार प्रसार किया, वह आने वाली पीढियों के लिए प्रेरणादायक कहना गलत नहीं होगा.

भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। शास्त्रों में कहा गया है- गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः। इसका अर्थ है कि गुरु केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि वह शक्ति है जो अज्ञान के अंधकार से निकालकर सत्य, विवेक और आत्मज्ञान के प्रकाश तक पहुंचाती है।गुरु ही वह मार्गदर्शक है जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करता है। माता-पिता जीवन देते हैं, लेकिन गुरु जीवन जीने की सही दिशा देता है। वह केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिकता, अनुशासन, संस्कार, कर्तव्य और मानवता का भी पाठ पढ़ाता है। गुरु के सान्निध्य में ही शिष्य अपनी क्षमताओं को पहचानता है और जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा पाता है।

आज के आधुनिक और तकनीकी युग में जानकारी प्राप्त करना आसान हो गया है, लेकिन सही ज्ञान और विवेक का मार्गदर्शन आज भी गुरु ही देता है। इंटरनेट सूचना दे सकता है, परंतु जीवन के कठिन निर्णयों में सही मार्ग दिखाने का कार्य एक योग्य गुरु ही कर सकता है। इसलिए गुरु का महत्व समय के साथ कम नहीं हुआ, बल्कि और अधिक बढ़ गया है। समाज के निर्माण में भी गुरु की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक आदर्श गुरु केवल सफल विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक तैयार करता है। राष्ट्र के भविष्य की नींव शिक्षकों और गुरुओं के हाथों में होती है। यदि गुरु अपने दायित्व का निष्ठापूर्वक निर्वहन करें और शिष्य श्रद्धा एवं समर्पण के साथ उनसे शिक्षा ग्रहण करें, तो एक सशक्त, संस्कारित और समृद्ध समाज का निर्माण संभव है।

गुरु पूर्णिमा जैसे पावन पर्व हमें अपने गुरुओं के प्रति सम्मान, कृतज्ञता और श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। यह दिन केवल पूजा-अर्चना का नहीं, बल्कि गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान और मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लेने का भी दिन है। निस्संदेह, गुरु वह दीपक है जो स्वयं जलकर दूसरों का जीवन प्रकाशित करता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अपने गुरु का सम्मान करे, उनके आदर्शों का अनुसरण करे और ज्ञान की इस परंपरा को आगे बढ़ाए।

यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है. मोबाइल नंबर ९४२३४२६१९९/८८५५०१९१८९.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों, कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.
संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्म्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.
www.vidarbhswabhiman.com

बिना गुरु के जीवन नहीं तरता

भागवत कथाकार अवध नारायण शुक्ला उर्फ वियोगी महाराज का प्रतिपादन

अवध नारायण शुक्ला उर्फ वियोगी महाराज

जीवन की प्रथम गुरु माँ श्रीमती शिवपती दुबे के साथ दुबे परिवार के सदस्य

विदर्भ स्वाभिमान, २३ जुलाई

प्रतापगढ़-जीवन में गुरु का अनन्य साधारण महत्व है. बिना गुरु के ना तो परमात्मा मिलते हैं और ना ही हमारा जीवन ही तर सकता है. इस आशा का मत प्रतापगढ़ जिले के जाने-माने श्रीमद् भागवत कथा का अवध नारायण शुक्ला उर्फ वियोगी महाराज ने किया. गुरु पूर्णिमा विशेषांक को अपना आशीर्वाद देते हुए उन्होंने विदर्भ स्वाभिमान अखबार को देश का राष्ट्रीय धर्म, मानव धर्म तथा माता-पिता की सेवा को बढ़ावा देने वाला एकमात्र अखबार निरूपित करते हुए इसके उत्तर उत्तर प्रगति की कामना की.

मानव जीवन अत्यंत दुर्लभ और अमूल्य है। इसका वास्तविक उद्देश्य केवल भौतिक सुख-सुविधाएँ प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मज्ञान, सत्य और परमात्मा की प्राप्ति करना है। इस कठिन मार्ग पर गुरु का मार्गदर्शन अनिवार्य है। इसलिए कहा गया है गुरु केवल शिक्षा देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाला दिव्य पथप्रदर्शक होता है। वह शिष्य को सही और गलत का विवेक सिखाता है, उसके जीवन को अनुशासन, संस्कार और सदाचार से भर देता है। गुरु के सान्निध्य में व्यक्ति अपने दोषों को पहचानता है और आत्मोन्नति के मार्ग पर अग्रसर होता है। संतों और महापुरुषों ने सदैव गुरु की महिमा का गुणगान किया है। गुरु ही जीवन रूपी नाव का कुशल नाविक है, जो सांसारिक मोह-माया के भंवर से निकालकर मुक्ति के तट तक पहुँचाता है। गुरु की कृपा से ही मन में भक्ति, सेवा, विनम्रता और आत्मविश्वास का विकास होता है।

आज के युग में भी यदि मनुष्य अपने जीवन को सफल, सार्थक और शांतिपूर्ण बनाना चाहता है, तो उसे सद्गुरु के मार्गदर्शन को स्वीकार करना होगा। गुरु का सम्मान, उनकी आज्ञा का पालन और उनके बताए मार्ग पर चलना ही जीवन की सबसे बड़ी साधना है। साक्षात्कार के दौरान वियोगी महाराज ने कहा कि गुरु का अपमान भगवान शिव भी नहीं बर्दाश्त कर पाते हैं. उनके मुताबिकगुरु बिन ज्ञान नहीं, ज्ञान बिन मुक्ति नहीं, और मुक्ति के बिना जीवन का वास्तविक कल्याण संभव नहीं।इसलिए गुरु के चरणों में श्रद्धा, विश्वास और समर्पण ही जीवन को भवसागर से पार लगाने का सर्वोत्तम साधन है।

माँ कनकेश्वरी

आध्यात्मिक और सामाजिक गुरु

माँ कनकेश्वरी की कृपा से भक्तों में सत्य, प्रेम, दया, त्याग और परोपकार जैसे गुण विकसित होते हैं। उनका आदर्श समाज में भाईचारा, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने का मार्ग प्रशस्त करता है। आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ वे समाज को शिक्षा, सेवा, सद्भाव और जनकल्याण के कार्यों के लिए प्रेरित करती हैं. जीवन में मां की अभी तक देश विदेश में सैकड़ो राम कथा हुई है. आज के भौतिकवादी युग में माँ कनकेश्वरी का संदेश और भी अधिक प्रासंगिक है। वे हमें सिखाती हैं कि जीवन की वास्तविक सफलता केवल धन या पद में नहीं, बल्कि सदाचार, सेवा और मानवता के मार्ग पर चलने में है। उनके आदर्शों का अनुसरण करने वाला व्यक्ति न केवल स्वयं का जीवन सार्थक बनाता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। माँ कनकेश्वरी आध्यात्मिक शक्ति, सामाजिक चेतना और मानव सेवा की ऐसी प्रेरणादायी गुरु हैं, जिनकी शिक्षाएँ हर युग में मानवता का मार्गदर्शन करती रहेंगी. मां का जीवन जहां भक्तों के लिए गुरु के रूप में है वही सामाजिक सेवा तथा शिक्षा क्षेत्र में उनका योगदान निश्चित तौर पर वर्तमान में अनुकरणीय है.

माँ कनकेश्वरी केवल आस्था का प्रतीक ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना, सेवा, संस्कार और सामाजिक समरसता की प्रेरणास्त्रोत भी हैं। उनकी उपासना से श्रद्धालुओं को आत्मबल, संयम, करुणा और मानव सेवा की प्रेरणा प्राप्त होती है। माँ का संदेश है कि सच्ची भक्ति केवल पूजा-अर्चना तक सीमित न रहकर समाज के प्रत्येक जरूरतमंद की सेवा में भी दिखाई दे।

गुरु का शास्त्रोक्त महत्व क्या है?

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः
गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म
तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
– गुरु गीता

अर्थ: गुरु ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान हैं तथा साक्षात् परब्रह्म स्वरूप हैं। ऐसे गुरु को प्रणाम है।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं
ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः।।
– श्रीमद्भगवद्गीता (४.३४)

अर्थ: विनम्रता, सेवा और जिज्ञासा के साथ गुरु के पास जाओ। तत्त्वदर्शी ज्ञानी तुम्हें सत्य का ज्ञान देंगे।

आचार्य देवो भव।
– तैत्तिरीय उपनिषद्

अर्थ: आचार्य (गुरु) को देवतुल्य मानो और उनका सम्मान करो।

यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।
– श्वेताश्वतर उपनिषद् (६.२३)

अर्थ: जिस व्यक्ति की ईश्वर के साथ-साथ गुरु में भी समान श्रद्धा होती है, उसके लिए शास्त्रों का वास्तविक ज्ञान प्रकट होता है।

शास्त्रों के अनुसार गुरु की महत्ता

गुरु अज्ञान का अंधकार दूर कर ज्ञान का प्रकाश देते हैं।

गुरु केवल शिक्षा नहीं, बल्कि जीवन का सही मार्ग भी दिखाते हैं।

आध्यात्मिक उन्नति और आत्मसाक्षात्कार के लिए गुरु का मार्गदर्शन आवश्यक माना गया है।

गुरु के प्रति श्रद्धा, सेवा और आज्ञापालन को ज्ञान प्राप्ति का आधार बताया गया है।

भारतीय संस्कृति में इसलिए कहा गया है कि गुरु वह दीपक हैं जो शिष्य के जीवन से अज्ञान का अंधकार दूर कर सत्य, ज्ञान और सदाचार का मार्ग प्रकाशित करते हैं।

www.vidarbhswabhiman.com

विदर्भ स्वाभिमान

संपादक - सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे

9423426199/8855019189

❖अमरावती,गुरूवार 23 से 29 जुलाई 2026 ❖वर्ष :17 ❖अंक- 07 ❖ पृष्ठ 8 ❖ मूल्य-4/-पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2025-2027❖डाक : शुक्रवार-शनिवार MAHHIN/2010/ 43881

बाबूजी के आदर्श विचार

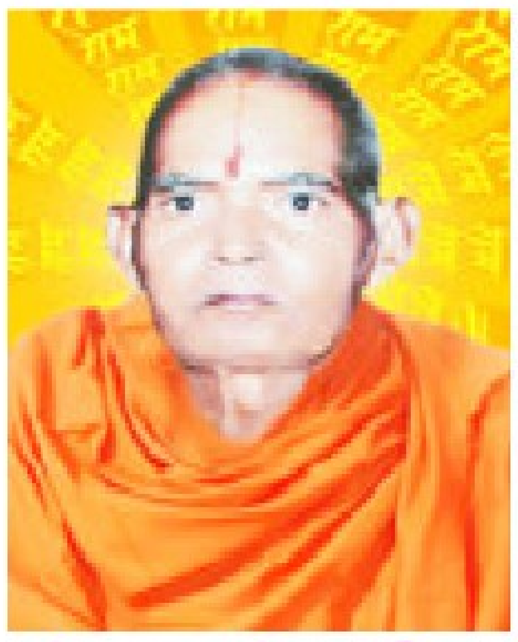

जीवन की खुशियां

ज़ीवन में गुरू के बगैर भव से तरना मुश्किल ही नहीं असंभव है. लेकिन यह भी उतना ही आवश्यक है कि गुरू भी प्रभु का अनन्य भक्त होने के साथ ही गुरू सदाचरण के साथ ही स्वयं भी बोले तैसा चाले वाला होना चाहिए. कुल मिलाकर जीवन में संस्कारों का महत्व सर्वाधिक होता है. ऐसे में गुरू की महत्ता सदैव दिलों में रहनी चाहिए. बिना गुरू के परमात्मा का भी मानव रूप में कल्याण नहीं हो सकता है.

500 गरीब छात्रों का जीवन संवारने का महती कार्य किया

अनंतपुर- जीवन में अगर कुछ करने का जिद कर लो तो निश्चित तौर पर असंभव कुछ नहीं है. आंध्र प्रदेश के श्री सत्यसाईं जिले के कोठाजरूवु निवासी अशोक पदापति ने शिक्षा के क्षेत्र में 500 गरीब बच्चों का जीवन संवारने का काम किया. वधान्य जना सोसायटी की स्थापना कर अशोक ने यह कार्य किया.

बचपन से ही मेधावी और संवेदनशील अशोक पदापति ने 2010 में बीटेक के अंतिम वर्ष के दौरान 'वधान्य जना सोसाइटी' की शरुआत की. इस पहल के लिए दोस्तों से भी आर्थिक सहयोग जुटाया और जरूरतमंद छात्रों की पहचान कर उन्हें पढ़ाई में मदद दिलाई. 15 साल में संगठन ने 500 से अधिक गरीब छात्रों की पढ़ाई व प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहयोग किया है. कई छात्र आईआईटी मद्रास व आईआईटी खड़गपर पहुंचे. कई ने रेलवे, वायुसेना, पुलिस और अन्य सरकारी नौकरियां हासिल की.

संस्कार ही संवारते हैं हर व्यक्ति का जीवन

शिवानंद पुरी महाराज ने कहा-जीवन में बिना गुरू के प्रकाश संभव नहीं होता

विदर्भ स्वाभिमान,22 जुलाई

अमरावती-जीवन को संवारने का काम बचपन से मिले संस्कार ही करते हैं. जीवन में पहली गुरू माता-पिता होते हैं, इसमें संस्कारों को देने के मामले में माताओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है. मां ही संस्कारों की जननी भी होती है. जीवन में बिना गुरू के कल्याण संभव नहीं होता है. इसलिए गुरू की महत्ता को समझते हुए सदैव गुरू का सम्मान और उनके विचारों को जीवन में अपनाना चाहिए. गुरू ही हमें अंधेरे से उबारते हुए प्रकाश की ओर ले जाते हैं. सूरज तो भी दिन में प्रकाश देते हैं लेकिन जीवन में आने वाले गुरू हमें चौबीसों घंटे प्रकाश देते हैं. इस आशय का मत चांदूर रेलवे स्थित श्री शिव-अंबा मंदिर के प्रमुख स्वामी शिवानंद पुरी महाराज ने व्यक्त किया.

गुरूपूर्णिमा के उपलक्ष्य में विदर्भ स्वाभिमान द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले विशेषांक को अपनी शुभकामनाएँ और आशिर्वाद देते हुए उन्होंने कहा कि आज संस्कारों के अभाव में कई समस्याएं पैदा हो रही हैं. शिवानंद पुरी महाराज ने कहा कि जीवन में चरित्र का सबसे अधिक महत्व होता है. वह चाहे आम आदमी हो अथवा संत-महात्मा. जीवन में चरित्र शुद्धता का संबंध भी संस्कारों से है. अच्छे संस्कार रहने पर चरित्र को कभी दाग नहीं लगता है.

पथ प्रदर्शक होते हैं गुरू

उनके मुताबिक गुरु केवल ज्ञान देने वाले शिक्षक नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा दिखाने वाले पथप्रदर्शक होते हैं. जिस प्रकार अंधकार को दूर करने के लिए दीपक आवश्यक है, उसी प्रकार अज्ञान, भ्रम और निराशा के अंधकार को दूर करने के लिए गुरु का सान्निध्य आवश्यक है.गुरु मनुष्य के भीतर छिपी हुई प्रतिभा, संस्कार और आत्मविश्वास को जागृत करते हैं. वे केवल शिक्षा नहीं देते, बल्कि **शेष पेज 6 पर**

अमरावती को महाराष्ट्र में पूना के बाद दूसरी सबसे बड़ी सांस्कृतिक और शिक्षा नगरी के रूप में माना जाता है. देश को प्रथम महिला राष्ट्रपति के साथ ही अमरावती के ही न्या.भूषण गवई के रूप में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के रूप में गौरवान्वित किया.

विदर्भ स्वाभिमान

संपादकीय

शहर पुलिस आयुक्त ओला का अभिनंदनीय कदम

अमरावती शहर में बढ़ते अपराध पर अंकुश लगाने के लिए दो गैंगों पर जिस तरह से पुलिस आयुक्त ने मकोका के तहत कार्रवाई की, निश्चित ही यह सराहनीय कदम है. कानून तथा पुलिस के खत्म होते डर को इसके माध्यम से स्थापित करने का सराहनीय प्रयास उन्होंने किया है. आज तेजी से बढ़ते अपराध चिंता के साथ ही चिंतन का विषय बन गए हैं. अपराधमुक्त शहर का विकास ही तेजी से हो सकता है. लेकिन पिछले कुछवर्षों के दौरान अमरावती शहर में अपराध जिस तरह से बढ़े हैं, नए साल में अभी तक दो दर्जन से अधिक हत्याओं की घटनाओं ने पूरे शहर को हिलाकर रख दिया है. लेकिन यह संतोष का विषय है कि शहर पुलिस आयुक्त ने अपराधियों पर कठोर कार्रवाई करते हुए दो गैंग के 28 आरोपियों के खिलाफ मकोका के तहत कार्रवाई की है. इस कार्रवाई का क्या असर पड़ेगा, यह तो आने वाला समय बताएगा लेकिन इतना तय है कि इस तरह की साहसिक कार्रवाई की सराहना की जानी चाहिए. शहर में विगत कई वर्षों से जिस तरह से तेजी से अपराध बढ़ा है और आम नागरिकों में चिंता के साथ भय है, वह निश्चित तौर पर समर्थनीय नहीं कहा जा सकता है. अपराधियों के हौसले इस कदर बुलंद हो गए हैं कि वह सरेआम जानलेवा हमला करने तथा हत्या करने में भी किसी तरह का डर नहीं महसूस कर रहे हैं.

शहर में संगठित अपराध के खिलाफ शहर पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। दो कुख्यात गैंगों के कुल 28 आरोपियों पर महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम के तहत कार्रवाई को बुधवार को मंजूरी दी है। अमरावती शहर पुलिस के इतिहास में एक साथ इतने बड़े स्तर पर मकोका लगाए जाने की यह पहली कार्रवाई है। ऐसे में इसकी सराहना की जानी चाहिए. लेकिन साथ ही अपराधियों के खिलाफ लगातार कठोर कार्रवाई जब तक नहीं होती रहेगी, तब तक शहर को निश्चिंतता नहीं आ सकेगी. नागपुरी गेट थाना क्षेत्र में असोरिया पेट्रोल पंप के पास एहफाज के भाई पर हुए चर्चित फायरिंग कांड के मामले में गैंग लीडर शेख मन्नू शेख सलीम समेत 18 आरोपियों पर मकोका लगाया गया है।यह गिरोह वर्ष 2019 से 2026 के बीच हत्या के प्रयास, फायरिंग, मारपीट, वसूली और अन्य गंभीर अपराधों सहित करीब 15 संगीन वारदातों में शामिल रहा है।राजापेठ थाना क्षेत्र के कुख्यात यश उर्फ सुनील कडू गैंग के 10 आरोपियों को भी मकोका के तहत शामिल किया गया है। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार यह गिरोह वर्ष 2018 से 2026 के दौरान राजापेठ समेत शहर के विभिन्न क्षेत्रों में 15 से अधिक गंभीर अपराधों में सक्रिय रहा है। गिरोह पर मारपीट, खंडणी वसूली, धमकी और अन्य संगठित आपराधिक गतिविधियों के आरोप हैं। कडू गैंग के खिलाफ कार्रवाई का प्रस्ताव राजापेठ थाना प्रभारी संदीप चव्हाण तथा शेख मन्नू गैंग के खिलाफ नागपुरी गेट थाना प्रभारी मनोहर कोटनाके ने संबंधित डीसीपी के माध्यम से पुलिस आयुक्त को भेजा था। आरोपियों के आपराधिक इतिहास और हालिया गतिविधियों की जांच के बाद सीपी राकेश ओला ने दोनों प्रस्तावों को मंजूरी देते हुए मकोका लगाने पर अंतिम मुहर लगा दी। पुलिस के इस प्रयास का बढ़ती गैंगों पर अंकुश लगाने में निश्चित तौर पर मदद मिलेगी. अमरावती शहर पुलिस आयुक्त का यह कदम न केवल सराहनीय बल्कि प्रशंसनीय है.अपराधियों पर लगाम कसना अब जरूरी हो गया है.

भगवान के समकक्ष होते हैं जीवन में गुरू

विदर्भ स्वाभिमान
www.vidrabhswabhiman.com 9423426199

ज़ीवन में माता-पिता के साथ ही गुरू का अनन्य साधारण महत्व होता है. गुरू ही हमें भगवान की महत्ता बताते हैं और दर्शन करवाते हैं. वर्तमान स्थिति में भी गुरू का वही महत्व कायम है. भारतीय लोग विश्व में सबसे अधिक भाग्यशाली होते हैं क्योंकि पवित्र भारत भूमि में प्रभु अवतारों के अलावा हमारे आदर्श संस्कार,जीवन जीने का तरीका, स्वयं से पहले दूसरों के बारे में सोचने वाली सोच के साथ ही विश्व कल्याण की भावना जैसी खूबियां ही हैं कि भारतीयों को पूरे विश्व में सम्मान दिलाती हैं. इस कड़ी में गुरू का सर्वाधिक महत्व होता है. गुरू ही हमें जीवन की दिशा देते हैं और उनके द्वारा दी गई दशा ही जीवन की दशा सुधारने का काम करती है. गुरूपूर्णिमा केवल एक पर्व नहीं बल्कि गुरू के प्रति असीम निश्चल सम्मान प्रकट करने का गहरा माध्यम है.

भारत में गुरू-शिष्य की परम्परा हजारों वर्षों से चली आ रही है. आज भी यह परम्परा चल रही है. गुरू के आदर्शों पर जीवन में चलना ही गुरू को सबसे बड़ी गुरूदक्षिणा कही जा सकती है. भारतीय शास्त्रों में गुरू को भगवान से भी बड़ा बताया गया है. यहां तक कहा गया है कि प्रभु अवतार लेने के बाद अगर गुरू नहीं करें तो उनका भी कल्याण असंभव है. श्रीरामचरितमानस में भी तुलसीदासजी ने स्पष्ट किया है कि अगर साक्षात भगवान शंकर भी मानव रूप में पैदा होते हैं तो बिना गुरू के उनका भी कल्याण नहीं हो सकता है. विभिन्न शास्त्रों ने गुरू के बारे में क्या कहा है, इसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है.

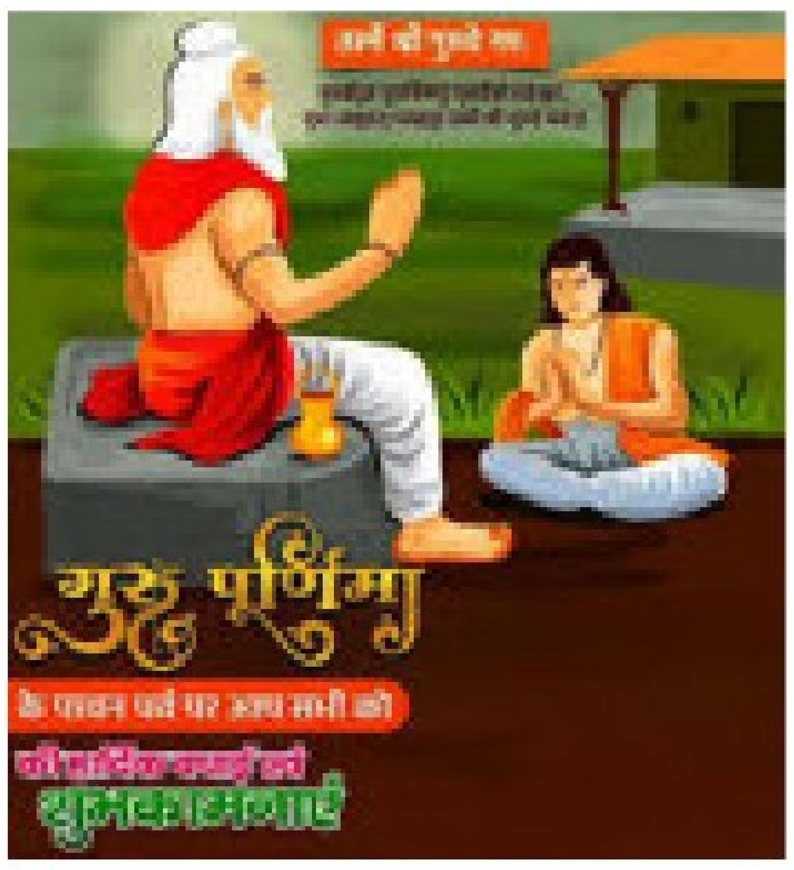

गुरु को ज्ञान का मार्गदर्शक माना गया है. शास्त्रों के अनुसार गुरु अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करते हैं. ज़ीवन में गुरू का अनन्यसाधारण महत्व होता है. अच्छे गुरू अपने भक्त का सदा कल्याण ही करते हैं. ऐसे गुरू जीवन में मिलना यह भाग्य नहीं बल्कि परमभाग्य की बात होती है. यही कारण है कि जीवन में सदा अच्छे गुरू का होना नितांत आवश्यक होता है. गुरु का स्थान ईश्वर के समान बताया गया है. भारतीय परंपरा में गुरु को ब्रम्हा, विष्णु और महेश के स्वरूप के रूप में सम्मान दिया गया है.

गुरु ब्रम्हा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः का भाव गुरु की महानता को दर्शाता है. शास्त्रों में गुरु को केवल शिक्षा देने वाला नहीं, बल्कि चरित्र, संस्कार और जीवन मूल्यों का निर्माण करने वाला माना गया है. उपनिषदों में गुरु के माध्यम से आत्मज्ञान और सत्य की प्राप्ति का मार्ग बताया गया है.गुरु शिष्य के गुणों को विकसित कर उसे श्रेष्ठ मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं.

महाभारत में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व बताया गया है. द्रोणाचार्य और अर्जुन जैसे उदाहरण गुरु के मार्गदर्शन और शिष्य की साधना को दर्शाते हैं-रामायण में गुरु का सम्मान प्रभु श्रीराम ने दुनिया के समक्ष रखा है. भगवान श्रीराम ने भी गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र से शिक्षा प्राप्त कर गुरु की मर्यादा और महत्व को स्थापित किया. शास्त्रों में गुरु को व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास का आधार माना गया है. भारतीय संस्कृति में गुरु सेवा और गुरु सम्मान को श्रेष्ठ गुणों में शामिल किया गया है.

गुरु जीवन के अंधकार को दूर करने वाले होते हैं. गुरु केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं देते, बल्कि विवेक, धैर्य और सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करते हैं. जीवन में प्रकाश लाने का काम केवल गुरू करते हैं. गुरू की महत्ता हजारों वर्षों से चली आ रही है. आज भी बरकरार है. गुरू ही आदर्श संस्कार देते हैं, जो जीवन संवारने का काम करता है.गुरू पूर्णिमा पर गुरू चरणों में नमन और वंदन करते हैं.

भक्ति, समर्पण और आत्मशुद्धि का महापर्व

आषाढ़ी एकादशी पर पंढरपुर में दिखती है भक्ति की शक्ति,बुजुर्ग वारकरी बनते हैं उदाहरण

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाई जाने वाली आषाढ़ी एकादशी सनातन धर्म के सबसे पवित्र और महत्वपूर्ण पर्वों में से एक है. इसे देवशयनी एकादशी तथा हरिशयनी एकादशी भी कहा जाता है. मान्यता है कि इस दिन भगवान श्रीविष्णु चार माह के लिए योगनिद्रा में चले जाते हैं और इसी के साथ चातुर्मास का शुभारंभ होता है. यह पर्व केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि आत्मसंयम, सेवा, सदाचार और ईश्वर भक्ति का संदेश भी देता है.महाराष्ट्र में आषाढ़ी एकादशी का विशेष महत्व है. लाखों वारकरी संत ज्ञानेश्वर महाराज और संत तुकाराम महाराज की पालकियों के साथ पैदल यात्रा कर पंढरपुर स्थित भगवान विठ्ठल-रुक्मिणी के दर्शन के लिए पहुँचते हैं. 'ज्ञानोबा-तुकोबा' के जयघोष, अभंग, कीर्तन और भजन से संपूर्ण वातावरण भक्तिमय हो उठता है. यह यात्रा सामाजिक समरसता, समानता और मानवता का अनुपम उदाहरण

प्रस्तुत करती है.आषाढ़ी एकादशी का व्रत मन और शरीर दोनों की शुद्धि का माध्यम माना जाता है. इस दिन श्रद्धालु उपवास रखते हैं, भगवान विष्णु का पूजन करते हैं, श्रीमद्भगवद्गीता एवं विष्णु सहस्रनाम का पाठ करते हैं तथा दान-पुण्य एवं सेवा कार्यों में भाग लेते हैं. यह पर्व हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं होती, बल्कि मानव सेवा, सत्य, करुणा और सदाचार का पालन ही ईश्वर की वास्तविक आराधना है.आज के भौतिकवादी युग में आषाढ़ी एकादशी का संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है. यह पर्व हमें लोभ, अहंकार और नकारात्मकता से दूर रहकर संयमित, सरल और आध्यात्मिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है. साथ ही प्रकृति, समाज और परिवार के प्रति अपने दायित्वों का स्मरण भी कराता है.आषाढ़ी एकादशी भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है. यह पर्व हमें भक्ति के साथ-साथ प्रेम, सेवा, समानता और मानव कल्याण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है. यदि हम इसके मूल संदेश को अपने जीवन में अपनाएँ, तो हमारा जीवन अधिक शांत, संतुलित और सार्थक बन सकता है. यही आषाढ़ी एकादशी का वास्तविक संदेश और महत्व है.यह मन के साथ ही आत्मशुद्धि का भी माध्यम बनती है.

सुधीर महाजन
प्राचार्य, पोद्दार इंटरनेशनल स्कूल,इंदौर

विदर्भ स्वाभिमान
यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है.मोबाइल नंबर 9423426199/8855019189.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों,कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.संपादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.Email-vidarbhäswabhiman@gmail.com.www.vidrabhswabhiman.com,rni. no MAHHIN/2010/ 43881

सी. विजयकुमार हैं भारत के सबसे अधिक सैलरी वाले सीईओ

नई दिल्ली-भारत की सबसे बड़ी क्ष्र कंपनियों में से एक एचसीएल टेक्नो के सीईओ और मैनेजिंग डायरेक्टर सी. विजयकुमार इस समय घरेलू सेक्टर में सबसे ज़्यादा चर्चित हैं. सी. विजयकुमार भारत की क्ष्र कंपनियों में सबसे ज़्यादा सैलरी पाने वाले सीईओ बन गए हैं.

विजय कुमार को टीसीएस और इन्फोसिस जैसी बड़ी कंपनियों के से भी ज़्यादा सैलरी मिल रही है. फाइनेंशियल ईयर 2024-25 में उन्होंने 10.85 मिलियन या लगभग 94.6 करोड़ कमाए, जो सेक्टर में सबसे ज़्यादा है. इतना ही नहीं, साल 2026 में विजयकुमार को कुल लगभग डद्म 176.47 करोड़ का पैकेज मिला, जिसकी वजह से विजयकुमार ने भारत के सबसे अमीर का टाइटल बरकरार रखा. एचसीएल टेक्नो के सालाना

पैकेज पिछले फाइनेंशियल ईयर के मुकाबले लगभग 67फीसदी ज़्यादा है.

कौन हैं सी. विजयकुमार?

सी. विजयकुमार कई सालों से में काम कर रहे हैं और उन्होंने एक इंजीनियर के तौर पर अपना करियर शुरू किया और धीरे-धीरे अलग-अलग पोस्ट पर पहुँचे. उन्होंने 2016 में मैनेजिंग डायरेक्टर का पद संभाला था. तब से, उनकी लीडरशिप में कंपनी ने डिजिटल टेक्नोलॉजी, क्लाउड,एआई और इंजीनियरिंग के एरिया में तेज़ी से विस्तार किया है.विजयकुमार के पैकेज में न सिर्फ़ महीने की सैलरी बल्कि बेसिक सैलरी का एक बड़ा हिस्सा, परफॉर्मेंस-बेस्ड बोनस, अलाउंस और स्टॉक-बेस्ड इंसेंटिव भी शामिल हैं. क्ष्र कंपनियों में सीनियर एग्जीक्यूटिव को कंपनी में लंबे समय तक बनाए रखने के लिए ऐसे स्टॉक-बेस्ड इंसेंटिव मिलना आम बात है. इस तरह, सी. विजयकुमार का सालाना पैकेज 176 करोड़ रुपये से ज़्यादा था.

पिछले कुछ सालों में,एचसीएल टेक्ना ने और इन्फोसिस जैसी कंपनियों के मुकाबले अच्छा परफॉर्म किया है. विजयकुमार की लीडरशिप में, त्तक्ष्व च्ठ्ड़ण ने दुनिया भर के कई देशों में अपना बिज़नेस बढ़ाया है और कंपनी ने साइबर सिक्योरिटी, क्लाउड और इंजीनियरिंग सर्विसेज़ में बड़े इन्वेस्टमेंट किए हैं. अभी, त्तक्ष्व च्ठ्ड़ण 60 से ज़्यादा देशों में सर्विस देती है और इसके लाखों कस्टमर हैं. भारत में एआई कंपनियों के सीईओ की सैलरी भारत में बड़ी सीईओ सर्विस कंपनियों के के. कृतिवासन ने फाइनेंशियल ईयर 2026 में सिर्फ़ 28 करोड़ रुपये कमाए, जो विजयकुमार से लगभग छह गुना कम है. इसी तरह, इंफोसिस के क्क्त सलिल पारेख को 82.6 करोड़ रुपये सैलरी मिली, जो विजयकुमार के पैकेज का लगभग आधा है, जबकि टेक महिंद्रा के क्क्त मोहित जोशी को लगभग 67.5 करोड़ रुपये, विप्रो के श्रीनिवास पल्लिया को 49.6 करोड़ रुपये और के वेणु लंबू को 27.26 करोड़ रुपये सैलरी मिली. सैलरी के मामले में उक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारियों की आय देखकर किसी को भी हैरत होती है. लेकिन भारत में सबसे अधिक सैलरी प्राप्त करने विजयकुमार पहले सीईओ बन गए हैं. सरकारी नौकरी की तुलना में निजी सीईओ सुखी है.

एनर्जेटिक एक्टर आदित्य श्रीवास्तव ने किया बड़ा संघर्ष

मुंबई- जीवन में बिना संघर्ष के सफलता नहीं मिलती है. सीआईडी सीरियल में सीनियर इंस्पेक्टर की भूमि निभाने वाले आदित्य ने भी जीवन में बड़ा संघर्ष किया है. कहना कोई बढ़ा-चढ़ाकर कहना नहीं होगा कि 90 के दशक के बच्चों का बचपन 'दया, दरवाज़ा तोड़ दो!' या 'दया, कुछ तो गड़बड़ है...' जैसे डायलॉग के बिना अधूरा होता. भारतीय टेलीविज़न के इतिहास के सबसे पॉपुलर और लंबे समय तक चलने वाले जासूसी शो सीआईडी में 'सीनियर इंस्पेक्टर अभिजीत' का रोल निभाने वाले एनर्जेटिक एक्टर आदित्य श्रीवास्तव का गत दिनों जन्मदिन था. बहुगुणी कलाकार के रूप में इस क्षेत्र में उनकी ख्याति है.

गंभीर पर्सनैलिटी, तेज़ दिमाग, असरदार स्टाइल और पिस्तौल पर हमेशा तैयार उंगलियों जैसे डैशिंग लुक वाले आदित्य ने 'इंस्पेक्टर अभिजीत' के रोल के ज़रिए दो दशकों से भी ज़्यादा समय तक देश भर के लाखों दर्शकों के दिलों पर राज किया है. लेकिन जिस 'अभिजीत' को आज दुनिया भर के दर्शक पसंद करते हैं, वह असल में इस सीरीज़ में सिर्फ़ 26 एपिसोड के लिए थे.

आदित्य श्रीवास्तव का संघर्ष

21 जुलाई को जन्मे आदित्य श्रीवास्तव की शुरुआती ज़िंदगी आसान नहीं थी. प्रयागराज के रहने वाले आदित्य का झुकाव पढ़ाई से ज़्यादा ड्रामा की तरफ़ था. अभिनय का सपना दिल में लिए वे मुंबई आ गए, लेकिन शुरुआती

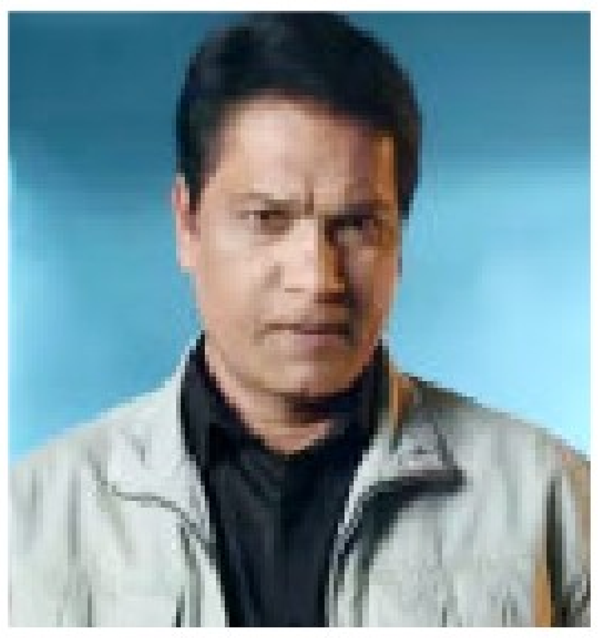

दिनों में उन्हें अस्वीकृति और संघर्ष का कड़ा संघर्ष करना पड़ा. थिएटर नाटकों और वॉयस ओवर के काम से लेकर छोटी और बड़ी भूमिकाओं तक, उन्होंने अपनी पहचान बनाने के लिए अथक परिश्रम किया. उन्हें अनुराग कश्यप की हिट फिल्म 'सत्या' में 'खांडिलकर' और 'ब्लैक फ्राइडे' में 'बादशाह खान' जैसी भूमिकाओं के लिए आलोचकों की प्रशंसा मिली; फिर भी, उन्हें जिस बड़ी सफलता या पहचान की उम्मीद थी, वह अभी भी उनसे दूर थी.

'सीआईडी' 26-एपिसोड की डील

जब 1998 में 'सीआईडी' शुरू हुआ, तो आदित्य इसमें नहीं थे; वे 1999 से जुड़े. जब निर्माता बी.पी. सिंह ने आदित्य को 'इंस्पेक्टर अभिजीत' की भूमिका की पेशकश की, तो उन्होंने इसे साफ तौर पर अस्वीकार कर दिया क्योंकि आदित्य उस समय नाटकों और फिल्मों पर ध्यान केंद्रित करना चाहते थे और एक दीर्घकालिक दैनिक अनुबंध में बंधना नहीं चाहते थे. फिर भी, निर्माता उन्हें भूमिका में लेने के लिए अड़े रहे. नतीजतन, बी.पी. सिंह और आदित्य के बीच एक स्पेशल डील हुई थी, जिसके मुताबिक वह सिर्फ़ 26 एपिसोड के लिए काम करने को राज़ी हुए थे. इन 26 एपिसोड के बाद, उनके कैरेक्टर 'अभिजीत' को या तो मार दिया गया या शो से हटा दिया गया. हालांकि, जब ये एपिसोड एयर हुए, तो उनकी एक्टिंग और पर्सनैलिटी को दर्शकों ने इतना पसंद किया कि सारे रिकॉर्ड टूट गए. लोगों की भारी डिमांड को देखते हुए, प्रोड्यूसर और खुद आदित्य दोनों को झुकना पड़ा; जिस एक्टर को शुरू में सिर्फ़ 26 एपिसोड के लिए साइन किया गया था, वह 20 साल तक सीआईडी का मेन रोल रहा.

नाथ ही उठा कर ह्मदय पर रख लेंगे

विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की भक्तिमय सेवा

विश्वास वाले भक्तों को हर पल होता है तिरूपति में अनुभव

कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से असंभव भी संभव हो जाता है. कलयुग के देवता भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी के करोड़ों भक्त विश्वभर में फैले हैं. पिछले 25 साल से उनकी भक्ति से क्या-क्या अनुभव किया है, इसको ध्यान में रखते हुए अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार तिरूपति निवासा भगवान व्यंकटेश्वर की कथा यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. हर गुरूवार को विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की यह भक्तिमय सेवा प्रभु चरणों में अर्पित है. निर्मल मन से प्रभु गोविंदा की भक्ति करने पर इसका अनुभव आप भी कर सकते हैं.तिरूमल तिरूपति देवस्थानम तिरूपति द्वारा प्रकाशित मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की श्री वेंकटाचल की महिला से साभार लिया जा रहा है.जय गोविंदा,जय गोविंदा, जय गोविंदा.डिजिटल संस्करण

www.vidarbhswabhiman.com/9423426199

ग़तांक से जारी- ब्रह्मादि की विनती पर व्यूह लक्ष्मी के द्वारा एक शुभ लग्न में वेंकटेश्वर के वक्ष पर अलंकृत होना,सोने की गुड़िया जैसे हंसते हुए सुवर्ण पद्म से 'नाथ ही उठाकर ह्मदय पर रख लेंगे' ऐसा समझ कर लक्ष्मी चपचाप बैठी रही. ब्रह्म और रूद्र दोनों ने लक्ष्मी के चेहरे की ओर देखकर उसके मन में रहनेवाले संदेह को समझकर हरि को नमस्कार करके इस रूप में कहा. 'हे जगदीश! सागर कन्या को उठाकर सावधानी से वक्ष पर रख लेना चाहिए. कहने पर सनकर हँसते हुए हरि ने कहा. 'आश्चर्य से क्यों देखते रहना है? सदा निवास के रूप में रहनेवाले मेरे वक्ष पर कम-से-कम अब तो रहने के लिए आप लोग लक्ष्मी से कहिए.' कहने पर ब्रह्म और शिव ने सुन कर मन में संतोष का अनभव किया. उन्होंने लक्ष्मी से इस रूप में कहा. 'हे देवी! अब तुम्हें अपने प्राणनाथ के ह्मदय पर बसना चाहिए. शुभ लग्न है. अब देर मत कीजिए.' इस रूप में विनति करने पर वह सागर तनया घंघरू के छमछमाने से. कटि पर बांधी गयी घंटियों के बजने से, सोने की छोर वाली सफेद साडी की गोंठों के चमकते, संुदर चोली में सोने के कटोरों की तरह दीपित थन, चोटी से लटकनेवाली फूल मालाएँ, हवा में हिलनेवाले सर के बाल, ललाट पर तिलक, कर्ण कंठाभरण, कर कंकण, संुदर शिरोभूषण, सुरचिर मालाएँ और हार इस प्रकार अनेक रूपों में अलंकृत, भासुर नासिकाभरण से शोभित, विंबाधरों से प्रदीप्त, संुदर ढंग से सजायी गयी कस्तूरी तिलक के साथ, चारों तरफ कांति के विकीर्ण होते, बालचंद जैसे भौहें, नेत्रांजन से दीपित, नीले रंग की कांति से, परिमल गंध लेपन के साथ, कुसमों के सौरभ चारों दिशाओं में फैलते, हंसगति से उस सुवर्ण पद्म से निकलकर, हरि के पास पहुँचने के लिए पद्म सरीवर से निकलकर श्री रमा सति पति के पास पहुँच गयी. लक्ष्मी ने महा मोह और भक्ति के साथ अपने पूर्व स्थान हरि के ह्मदय पर चंदन लेप किया.तुलसी दल, दूर्वार कलियों, जूही के फूल, गुलदाउदी के फूल आदि फूलों से बनी संुदर माला को हाथ से लेकर कंकणों के बजते लक्ष्मी ने हरि के गले में पहना दिया. वहाँ खड़ी रहनेवाली लक्ष्मी को देखकर उसे क्षमा करके चक्री ने अपने दोनों हाथों से उसे उठाकर अपने वक्ष पर रखा.

तब देवताओं ने उनके सिरों पर पुष्पों की वर्षा करवायी.देव दंदुभी बजायी गयी. इंद्र ने हरि के पास पहुंचकर नमस्कार किया.तब आकाश में रंभादि अप्सरसाओं ने नाट्य किया.गंध की सतियों और पतियों ने कीर्तन गाया. तुंबुर, नारदादि ने अपनी वीणाओं को बजाकर गीत गाये.कश्यपादि मुनिगण और देवताओं समेत भक्तों ने निगमांत सूक्तियों से हरि का कीर्तन किया. पार्वती और सरस्वती देवियों ने हरि और सिरि को मंगल हारतियाँ उतारी. तब ब्रह्म ने भी बड़े संतोष के साथ मुनियों एवं देवताओं के साथ मिलकर वेदगान किया. तब विष्णु आनंदित होकर लक्ष्मी के साथ गरूड वाहन पर बैठ गए. तब ब्रह्म, इंद्रादि ने इस रूप में कहा. 'महालक्ष्मी के उदित होनेवाले इस पद्म सरोवर में कार्तिक मास की शुद्ध पंचमी के दिन जो कोई पुण्य स्नान करेगा उन्हें लक्ष्मी के कटाक्ष से सकल सुखभोगों के साथ-साथ मुक्ति भी प्राप्त होगी.' इस रूप में उस तीर्थ की अनेक प्रकार से स्तुति करके, नमस्कार करके उस तीर्थ के जल को अपने सिरों पर धारण किया. फिर अपने-अपने वाहनों पर आरूढ़ हुए. तब हरि उनको साथ लेकर वेंकटाचल पर चढ़ गए. वराह स्वामी की अनुमति से विश्वक्सेन के द्वारा पहले से अलंकृत किए हुए अपने निजी वास पर पहुँच गए. वहाँ पर तब पद्मावती ने सकल आभरणों से भूषित होकर आनंद निलय में प्रवेश करके हरि और सिरि को नमस्कार किया. सिरि ने तब पद्मावती को आशीर्वाद दिया. पास में बुलाया. आदर किया. वकुला से कुशल-क्षेम मांगा. फिर अपनी इच्छा मात्र से सारे पदार्थों का सृजन करके ब्रह्मादियों को भोज दिया. सभी आगंतुकों ने प्रभु व्यंकटेश माता महालक्ष्मी को आशिर्वाद दिया और अपने-अपने धाम जाने के लिए निकल पड़े.

शेष अगले अंक में पढ़ें

रहाटगांव में 29 जलाई को गुरु पूर्णिमा उत्सव,शहर में हों गे विभिन्न कार्यक्रम

तीन दिन का गुरूचरित्र पारायण, कौंडण्यपुर में विदर्भ रूक्मिणी पीठ में भी उत्सव

विदर्भ स्वाभिमान, 23 जुलाई

अमरावती- गुरूपूर्णिमा के उपलक्ष्य में शहर के साथ ही पूरे जिले में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है. इस कड़ी में रहाटगांव में 29 को गुरू पूर्णिमा उत्सव के अलावा विदर्भ रूक्मिणी पीठ अंबिकापुर कौंडण्यपुर में राजराजेश्वर गुरू माऊली के मार्गदर्शन, गुरू पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया गया है. इसमें अधिकाधिक संख्या में भक्तों से शामिल होने तथा पुण्यलाभ प्राप्त करने का आग्रह किया गया है.

रहाटगांव में भव्य कार्यक्रम

गुरु पूर्णिमा के मौके पर, परब्रह्म श्री स्वामी समर्थ को गुरु बनाने के लिए शुक्रवार, 29 जुलाई आषाढ़ पूर्णिमा को श्री स्वामी समर्थ सेवा केंद्र आरोग्य सेवा कॉलोनी रहटगांव में गुरु पूजन और गुरु पूजन का एक बड़ा दिव्य कार्यक्रम रखा गया है. इसमें

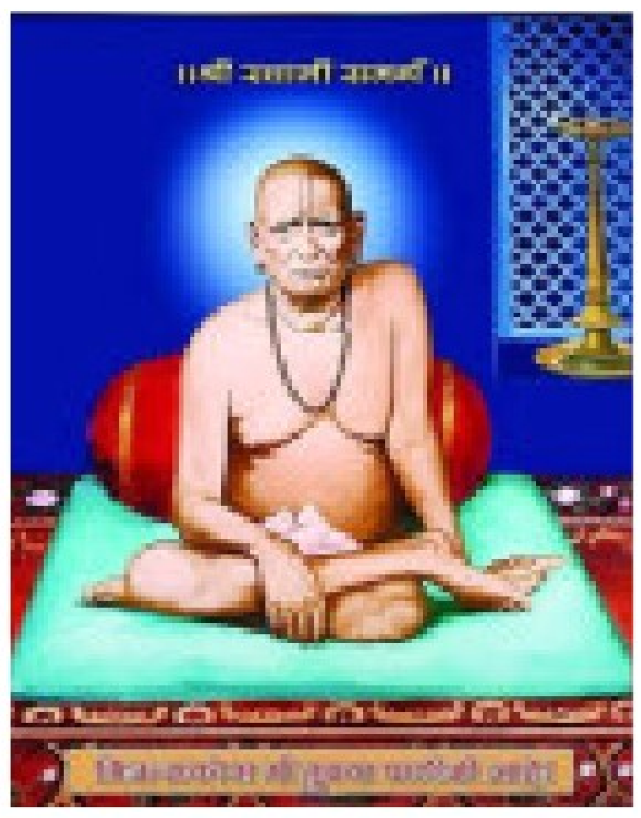

रविवार, 26 जुलाई से 28 जुलाई तक हर हफ़्ते पारायण होगा.तीन दिन का गुरूचरित्र पारायण होगा. हालांकि, सभी भक्तों के साथ-साथ स्वामी समर्थ सेवकों को दत्त जयंती हफ़्ते और स्वामी पुण्यतिथि हफ़्ते की तरह तीन दिन के पारायण के लिए बैठना होगा.

बधवार, 29 जलाई को भूपाल आरती के बाद, सभी सेवक हवन के साथ श्री स्वामी सारामृत पोथी का एक साथ पारायण करेंगे. इसके बाद परब्रह्म श्री स्वामी समर्थ महाराज को गुरु बनाने के इरादे से एक प्रोग्राम होगा. परब्रह्म को गुरु बनाते समय, 'आप हमारे गुरु हैं, परम गुरु हैं' यह विनती करके मन्नत मांगेंगे. इसके बाद 10:30 बजे नैवेद्य आरती होगी और प्रोग्राम के बाद दोपहर में फ्री सवाल-जवाब का प्रोग्राम होगा. इसमें हस्तरेखा कुंडली देखने के बाद, बेटे-बेटियों की शादी, पढ़ाई, नौकरी के साथ-साथ पिता के दोष, वास्तु दोष, लाइलाज बीमारियां वगैरह पर गहराई से गाइडेंस दी जाएगी. हवनयुक्त परायण करने के लिए, मन्नत के संकल्प के साथ श्री स्वामी समर्थ सारामृत पोथी लानी चाहिए. श्री स्वामी समर्थ सेवा केंद्र रहटगांव के ऑर्गनाइज़र ने ज़्यादा से ज़्यादा लोगों से प्रोग्राम में आकर प्रोग्राम का फायदा उठाने की अपील की है.

एक माँ का दर्द 'बेटे ने विरासत माँगी, माँ नहीं और मैं अपना ही घर छोड़ने को मजबूर हो गई

ज़ीवन में माता-पिता के त्याग का स्थान कोई नहीं ले सकता है. इस लेख में मां ने अपने दर्द के साथ ही समाज के पतन की दिशा पर भी कटाक्ष किया है. कानून कागजों से सम्पत्ति बांट सकता है लेकिन क्या कर्तव्य के लिए भी कोई कुछ करेगा. सामाजिक दुर्दशा का यह जहां सटीक चित्र है, वहीं क्या समाज भी संवेदनहीन हो गया. यह किसी एक मां नहीं बल्कि लाखों मांओं का दर्द है. इस पर समाज को चिंतन करना चाहिए.

मैं शोभा संतोष बुच्चा हूँ.

यह कोई कहानी नहीं है. यह मेरे जीवन का वह सच है जिसे मैं वर्षों से अपने भीतर दबाए बैठी हूँ. आज मैं इसे इसलिए लिख रही हूँ क्योंकि शायद मेरे शब्द उन हजारों माताओं की आवाज़ बन सकें जो अपने ही बच्चों के होते हुए भी अकेली हैं.

कभी एक समय था जब मेरा घर मेरा संसार था. मेरे पति थे, मेरे बच्चे थे, और उन बच्चों के लिए अनगिनत सपने थे. मैंने और मेरे पति ने अपना पूरा जीवन परिवार के लिए लगा दिया. जो कमाया, जो जोड़ा, जो बनाया, वह अपने बच्चों के भविष्य के लिए बनाया.हर माँ की तरह मैंने भी अपने बेटे को गोद में खिलाया. जब वह बीमार पड़ता था तो रात-रात भर उसके सिरहाने बैठी रहती थी. उसकी तकलीफ़ मुझे अपनी तकलीफ़ लगती थी. उसकी मुस्कान मेरी खुशी थी. उसके भविष्य के लिए मैंने अपनी अनेक इच्छाओं का त्याग किया.

लेकिन आज जब मैं अपने जीवन के इस पड़ाव पर खड़ी हूँ, तब मैं खुद से एक प्रश्न पूछती हूँ-

क्या एक माँ का प्रेम केवल एकतरफ़ा रिश्ता बनकर रह गया है?

मेरे पति का निधन हुआ. उनके जाने के बाद मुझे लगा कि अब परिवार पहले से अधिक एकजुट होगा. लेकिन हुआ इसका उलटा.

जिस घर को मैं अपना घर समझती थी, जहाँ मैंने वर्षों तक गृहस्थी बसाई थी, उसी घर में धीरे-धीरे मेरे लिए जगह कम होती चली गई. संपत्ति को लेकर विवाद बढ़ने लगे. मेरे पति की इच्छा थी कि दोनों बच्चों के साथ न्याय हो. उनका मानना था कि बेटा और बेटी दोनों उनकी संतान हैं और दोनों को समान सम्मान मिलना चाहिए.

लेकिन लालच रिश्तों से बड़ा हो गया.

जो संपत्ति परिवार को जोड़ सकती थी, वही संपत्ति परिवार को तोड़ने का कारण बन गई.

आज स्थिति यह है कि मैं अपने उस घर में नहीं रहती जिसे मैंने अपना जीवन देकर बसाया था. मैं वर्षों से अपनी बेटी और दामाद के साथ रह रही हूँ. उन्होंने मुझे सम्मान दिया, सुरक्षा दी और अपनापन दिया.

लेकिन क्या एक माँ के दिल का दर्द इतना भर देने से समाप्त हो जाता है?

सच यह है कि नहीं.

सबसे बड़ा दुःख घर छूटने का नहीं होता.

सबसे बड़ा दुःख उस बेटे का बदल जाना होता है जिसके लिए आपने अपना जीवन लगा दिया.

लेखिकाः शोभा संतोष बुच्चा

मैं अक्सर सोचती हूँ कि आखिर ऐसा क्या होता है कि विवाह के बाद कुछ बच्चों की प्राथमिकताएँ इतनी बदल जाती हैं कि उन्हें अपने ही माता-पिता बोझ लगने लगते हैं?

जो माँ कभी उनके लिए पूरी दुनिया होती थी, वही माँ अचानक अनचाही कैसे हो जाती है?

जो बेटा कभी अपनी माँ का हाथ पकड़कर चलता था, वही बेटा एक दिन ऐसा व्यवहार कैसे कर सकता है कि उसकी माँ स्वयं को असुरक्षित महसूस करने लगे?

एक माँ के लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा कि वह अपने ही बेटे के सामने सहज महसूस न करे.

मैं किसी से नफ़रत नहीं करती. मैं किसी का बुरा नहीं चाहती.

लेकिन मैं समाज से एक प्रश्न अवश्य पूछना चाहती हूँ.

क्या केवल जन्म से बेटा होने भर से किसी व्यक्ति का नैतिक अधिकार बन जाता है कि वह माता-पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी बने?

यदि कोई संतान अपने वृद्ध माता-पिता का सम्मान नहीं करती, उनकी देखभाल नहीं करती, उन्हें मानसिक पीड़ा देती है, उन्हें अपने ही घर से दूर होने पर मजबूर कर देती है, तो क्या उसे उसी अधिकार से माता-पिता की संपत्ति पर दावा करना चाहिए जैसा उस संतान को जो कठिन समय में माता-पिता के साथ खड़ी रही?

मैं कानून की नहीं, नैतिकता की बात कर रही हूँ.

कानून कागज़ों पर अधिकार बाँट सकता है.

लेकिन क्या समाज यह प्रश्न पूछने का साहस करेगा कि अधिकारों के साथ कर्तव्य भी आते हैं?

आज मैं अपनी बेटी के साथ रहती हूँ. उसने मुझे वह सम्मान दिया जिसकी हर माँ हकदार होती है. उसने मुझे यह एहसास कराया कि संतान का मूल्य उसके लिंग से नहीं, उसके संस्कारों से तय होता है.

मेरा उद्देश्य किसी को कटघरे में खड़ा करना नहीं है.

मेरा उद्देश्य केवल समाज के सामने एक आईना रखना है.

उस आईने में शायद बहुत-से लोग अपने परिवारों की तस्वीर देख पाएँगे.

आज मैं उन सभी बेटों और बेटियों से कहना चाहती हूँ

संपत्ति का असली मूल्य ज़मीन के कागज़ों में नहीं होता.

उसका असली मूल्य उन त्यागों में होता है जिनसे वह बनाई गई होती है.

और माता-पिता की सबसे बड़ी विरासत मकान, खेत, प्लॉट या बैंक बैलेंस नहीं होते.

उनकी सबसे बड़ी विरासत उनके संस्कार होते हैं.

यदि संस्कार खो गए, तो संपत्ति बच भी जाए तो क्या बचा?और अंत में, समाज से मेरा केवल एक प्रश्न है.

क्या हम ऐसे समय की ओर बढ़ रहे हैं जहाँ वृद्ध माता-पिता का सम्मान केवल भाषणों में रह जाएगा, जबकि वास्तविक जीवन में उन्हें अपने ही बच्चों के होते हुए भी पराया बनकर जीना पड़ेगा?

यदि यह सच है, तो यह केवल एक माँ की हार नहीं है.

यह पूरे समाज की हार है.

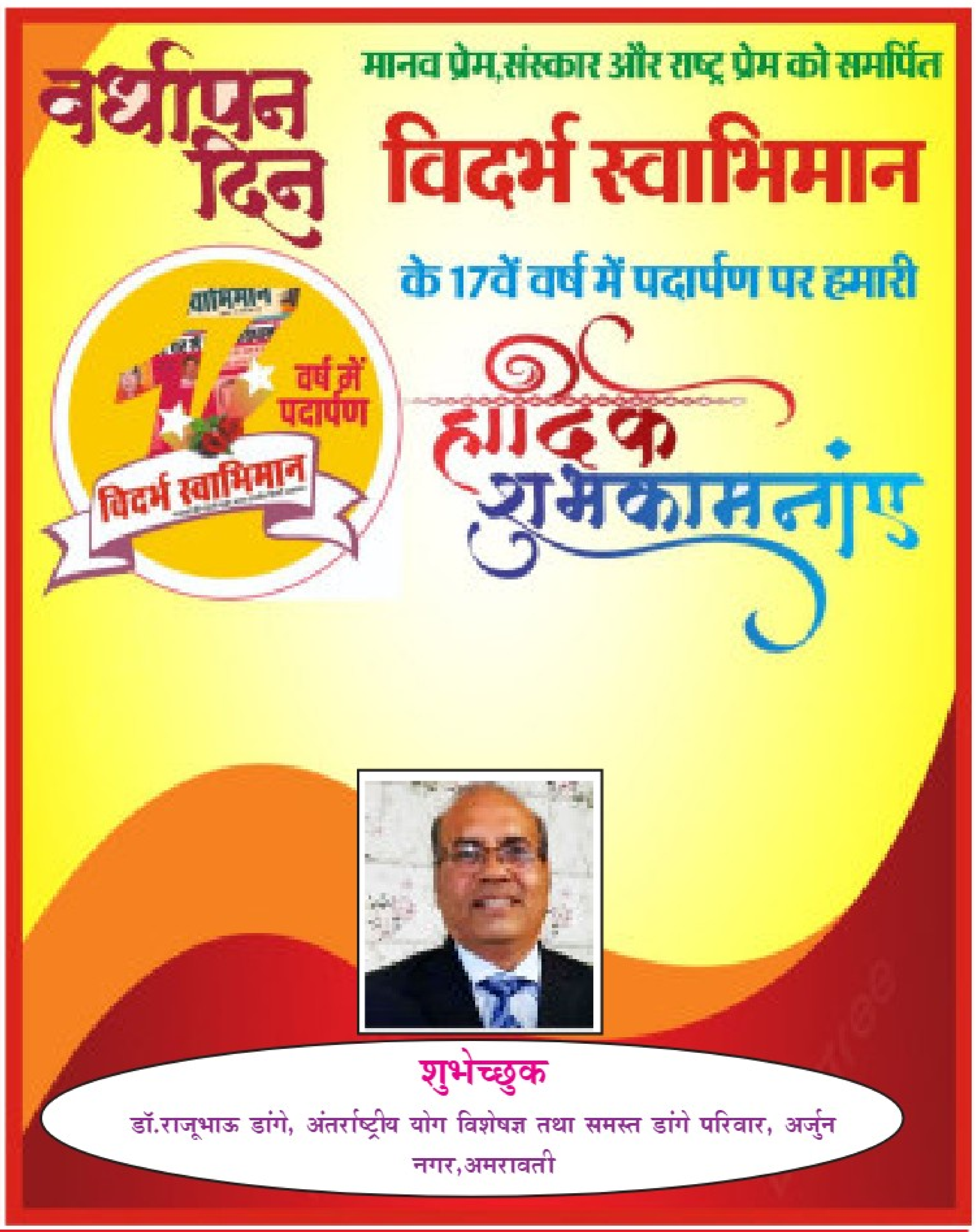

सहयोग,सेवाभाव तथा विनम्रता के त्रिवेणी संगम

श्रीकांत भालेराव के जन्मदिन 23 जुलाई पर विशेष,सामाजिक कामों में भी अग्रणी

साईं नगर क्षेत्र निवासी तथा सामाजिक,सहकार्य के साथ ही सेवाभाव में अग्रणी श्रीकांतराव भालेराव को जन्मदिन पर विदर्भ स्वाभिमान तथा श्री केसरीनंदन संस्था की ओर से मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. वे स्वस्थ रहें, मस्त रहें, प्रभु चरणों में यही कामना. मिलनसार तथा मददगार स्वभाव के धनी श्रीकांत भालेराव यारों के यार तथा सदैव सहयोगी भूमिका रखते हैं. यही कारण है कि उन्होंने हजारों मित्र तैयार किए हैं.

किसी के भी सुख-दुख में सदैव सहयोग की भावना जहां रखते हैं, वहीं विनम्रता उनकी दूसरी सबसे बड़ी खूबी है. अपनी मेहनत, लगन, स्वभाव के कारण कब दिलों में जगह बना लेते हैं, इसका पता नहीं चलता है, ऐसे ही लोगों में हैं हमारे बड़े भाई श्रीकांत भालेराव. मेहनत,समर्पण तथा बेहतरीन स्वभाव के कारण हजारों मित्र उन्होंने बनाए हैं. आदमी के जीवन में सबसे बड़ी अहमियत पैसे को है। लेकिन इसके साथ ही जीवन में कामयाबी के लिए उनके जैसे कुछ लोग सदैव प्रेरणा देने का काम करते हैं.

श्रीकांत भालेराव जहां मददगार व्यक्ति हैं, वहीं हर व्यक्ति को सहयोग करने तथा प्रोत्साहित करने में उनका जवाब नहीं है. हर इन्सान की कामयाबी में किसी का सहयोग होता है, मेरी कामयाबी में वे ऐसे ही व्यक्ति हैं. आज रोजाना सैकड़ों लोगों के साथ संपर्क आता है,उसमे के कुछ लोग ही जीवन का ऐसा हिस्सा बन जाते हैं, जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता है, ऐसे ही मित्रों में वे हैं.उनका कहना है कि बड़ा होना बड़ी बात नहीं बल्कि जीवन में संतोष होना बड़ी बात होती है. उनका स्वभाव इतना बेहतरीन है कि किसी की भी मदद को तत्पर रहते हैं. मेरे जैसे सैकड़ों लोग ऐसे होंगे, जिन्हें प्रेरणा देने और सहयोग के माध्यम से आगे बढ़ाने का कार्य उन्होंने किया है.

आज की स्वार्थ से भरी दुनिया में जब अपने भी मुसीबत में दूर हो जाते हैं, ऐसे में कुछ पराए अपने स्वभाव,मददगार व्यक्तित्व से कब अपने हो जाते हैं, इसका पता नहीं चलता है. ऐसे ही लोगों में श्रीकांत भाऊ भी हैं. जीवन संघर्ष और चुनौतियों का नाम है, रोज नई-नई चुनौतियां आती हैं, इसका रोज सामना करना पड़ता है? तब भगवान याद आते हैं. प्रभु भले नहीं आते हैं लेकिन वे अपने रूप में किसी को भेजकर मदद जरूर करते हैं, इसका अनुभव श्रीकांत भालेराव से मुलाकात के बाद हुआ.मेरे जीवन में भी उनके सहयोग और प्रोत्साहन को कभी भूल नहीं सकता. उनके जन्मदिन पर मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. सहयोग करने वालों में श्रीकांतजी भालेराव, रविंद्र इंगोले, तेजराव वाटाणे, सुरेश जैन,अतुल मेहता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है. श्रीकांत भालेराव के जन्मदिन पर सभी की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. **मनोज चौरे,पार्वतीनगर,अम.**

खत्म नहीं होता गुरू का क़भी प्रकाश-शिवानंद पुरी

पेज 1 से जारी- जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं. उनके मार्गदर्शन से व्यक्ति सत्य, धर्म, करुणा, सेवा और सदाचार के मार्ग पर अग्रसर होता है. गरु की प्रेरणा से ही जीवन में अनशासन, संयम और सकारात्मक सोच का विकास होता है. उन्हों ने कहा कि सनातन धर्म महान है और इसमें कहानी नहीं बल्कि हर बात का प्रमाण रहता है. लेकिन कुछ लोगों के कारण इस धर्म को बदनाम करने का प्रयास किया जाता है. ऐसे में संत-महात्माओं के साथ ही धर्म का प्रचार करने वालों के लिए भी अपना चरित्र और सीख दोनों में तालमेल बिठाना जरूरी होता है. बोले तैसा चाले को जीवन में स्वयं अपनाने वाले शिवानंद पुरी महाराज के मुताबिक आज समाज का चरित्र भी तेजी से बदल रहा है. किसी के कहने पर विश्वास करने कीबात बढ़ी है. कई बार तो सच्चाई जाने बगैर ही किसी के प्रति गलत धारणा लोग बनाने लग जाते हैं. भारतीय संस्कृति में गुरु को भगवान से भी श्रेष्ठ स्थान दिया गया है, क्योंकि गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं. संत कबीरदास ने कहा है. यहां पर संत कबीर ने प्रभु से भी गुरू को बड़ा यह कहते हुए बताया कि भगवान से भी मिलाने वाले आखिर गुरू ही रहते हैं. उनका दोहा

'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय.
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय..'

आदर्श पत्रकारिता के साथ 17वें वर्ष में पदार्पण पर विदर्भ स्वाभिमान को हमारी हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छुक
संजय विजयकर तथा विजयकर परिवार,अमरावती.
सुख्यात युवा व्यवसायी तथा सेवाभावी व्यक्तित्व

विदर्भ स्वाभिमान
सदस्य बनें
विदर्भ स्वाभिमान संस्कारों का प्रोत्साहित करने वाला अखबार है. बच्चों के लिए यह ज्ञान का भंडार है. इसकी सदस्यता का अभियान चल रहा है. ऐसे में सदस्य बनने के इच्छुक संपर्क करें. मार्केटिंग करने तथा पेपर बांटने के लिए लड़के चाहिए.
संपर्क
छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती.
मो.9423426199

मानवता सेवा से ओतप्रोत व्यक्तित्व हैं बिट्टूभैया

जन्मदिन पर विशेष अभी तक 4500 बोतल से अधिक का रक्तदान करवाकर लोगों के बचाए प्राण

होटल व्यवसायी, मानवता की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले,यारों के दिलदार और चहेते रविन्द्र सिंग सलूजा उर्फ बिट्टूभैया ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका पूरा जीवन संघर्ष,सफलता और बाद में समाज को लगातार देने से ही भरा हुआ है. आज के दौर में जहां मामूली मदद का ढिंढोरा पीटा जाता है, वहीं भैया का सालभर सेवा उपक्रम चलता है लेकिन किसी से जिक्र तक नहीं करते हैं. वे कहते हैं रब ने दिया है, इस लायक बनाया है कि अपने से कमजोर की मदद कर सकें तो करते हैं, यह किसी को बताने की कोई जरूरत वे नहीं समझते हैं. हर क्षेत्र में उनकी मजबूत पैठ रहने,सभी दलों के नेताओं के साथ व्यक्तिगत करीबी संबंध के बाद भी कभी किसी तरह का गर्व नहीं करते हैं. सेवाभाव उनमें कूट-कूटकर भरा है. दोनों बेटे भी पिता के आदर्श विचारों पर चलते हुए नम्रता की मूरत कहा जाए तो गलत नहीं होगा. का उल्लेख किया जा सकता है. सेवाभाव कूट-कूटकर भरा हुआ है.

हर साल अपने जन्मदिन पर रक्तदान शिविर लेकर गरीब मरीजों की जरूरतों का जहां ख्याल रखते हैं, वहीं दिव्यांग, समाज के जरूरतमंदों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं. मदद करने वाले को पहली शर्त यही रखते हैं कि यह बात केवल उन दोनों तक ही रहेगी. इस साल भी भाई साहब के 21 जुलाई को जन्मदिन पर रक्तदान शिविर रखा गया है. इसके माध्यम से भी समाज सेवा तथा गरीब और जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराना ही विचार रहता है. विदर्भ स्वाभिमान परिवार की उन्हें जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान

वे इसी तरह स्वस्थ रहें, मस्त रहें, प्रभु चरणों में यही कामना.हरफनमौला एवं सामाजिक कामों में अग्रणी व्यवसायी के रूप में होटल ईगल के संचालक रविन्द्रसिंग उर्फ बिट्टूभैया सलूजा बचपन से ही संवेदनशील रहने के साथ ही यारों पर मर मिटने वाले व्यक्ति हैं.व्यवसाय में सफलता और मानवता का धर्म दोनों ही साथ लेकर चलते हैं. सैकड़ों लोगों को रोजगार के माध्यम से जहां मदद करते हैं, वहीं कोई गरीब, मरीज उन्हें दर्द बताए तो यथासंभव मदद से नहीं चूकते हैं. उनकी सादगी, उनका अपनापन किसी को भी प्रसन्न कर देता है. वे कहते हैं कि आप किसी को सम्मान देंगे तो निश्चित ही आपको भी सम्मान मिलेगा. व्यवसायी के रूप में रविन्द्रसिंग उर्फ बिट्टूभैया सलूजा जितने सफल हैं, उतने ही सफल वे रिश्तों को निभाने के मामले में भी रहते हैं.यही कारण है कि न केवल अमरावती बल्कि देशभर में लाखों की संख्या में उनका मित्र परिवार है.सामाजिक कामों में जहां अग्रणी रहते हैं, वहीं दूसरी ओर सदैव नेक कामों में योगदान देने से पीछे नहीं हटते हैं.हर व्यक्ति को अपनी ओर से जितना संभव हो, मानवता की सेवा करनी चाहिए. सेवा केवल पैसे से ही नहीं होती है बल्कि किसी जरूरतमंद को रक्तदान कर भी हम सेवा कर सकते हैं. यही कारण है कि हर साल अपने जन्मदिन पर रक्तदान शिविर लेते हैं. रक्तदान शिविर में अधिकाधिक लोगों से शामिल होकर सामाजिक योगदान देने का आग्रह उन्होंने विदर्भ स्वाभिमान के माध्यम से किया है. हमारी शुभकामनाएं.

दिल खोलकर करते हैं सामाजिक काम,बताने से करते हैं परहेज

दिलदार व्यक्ति के साथ ही यारों के लिए जहां वे समर्पित हैं, वहीं दूसरी ओर सेवाकार्य का उनका उपक्रम लगातार जारी रहता है. किसी गरीब बेटी की शादी, वृद्धाश्रमों में सेवा प्रकल्प के माध्यम से बुजुर्ग माता-पिता का आशिर्वाद लेने के साथ ही अंध विद्यालय, दिव्यांग संस्थाओं की मदद जैसे कार्य सालभर जारी रहतेहैं. लेकिन इन विद्यालयों के प्रमुखों से पहले ही आग्रह करते हैं कि यह वे मानवता की सेवा और स्वयं के आत्मिक समाधान के लिए कर रहे हैं, किसी प्रचार क्री लालसा में नहीं हैं. विगत 20 वर्षों से उनके साथ बड़े भाई जैसा संबंध रहने के बाद उनके व्यक्तित्व को देखने के बाद सम्पन्नता में विनम्रता, यारों का यार और सदा समाज तथा मानव सेवा की सोचने वाले व्यक्ति हैं. उन्हें जन्मदिन पर करोड़ों मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. वे स्वस्थ रहें, मस्त रहें, यही कामना.

गुरूवार 23 से 30 जुलाई 2026

इस सप्ताह आप किसी शादी पार्टी में सम्मिलित होने बाहर जा सकते है, वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें. वाद-विवाद की स्थिति से खुद को दूर रखें. अपने परिचित व्यक्ति से आज आपको अपमान का सामना करना पड़ सकता है, पार्टनर का साथ मिलेगा.

वृषभ- इस सप्ताह आप नया वाहन आदि खरीद सकते है, परिवार में नया मेहमान आ सकता है. आपको कोई नए कार्य का बड़ा ऑफर आज मिल सकता है, किसी पुराने मित्र से मिलना होगा. स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिवार में मांगलिक कार्य के योग बनेंगे.

मिथुन- आज का दिन आपका शानदार रहेगा, मन स्थिर और प्रसन्न रहेगा. वाणी के प्रभाव से आज आपके रुके हुए काम पूरे होंगे. किसी विशेष व्यक्ति से मिलना होगा. आज कोई नया व्यापार आप शुरू कर सकते है, पार्टनर के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

कर्क- आज का दिन आपका सोच विचार कर काम करने का है. आप कोई बड़ा डिसीजन व्यापार-व्यवसाय में न लें, नई साझेदारी में सावधानी बरतें. स्वास्थ्य का ध्यान रखें, पार्टनर के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी. आप आज वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें.

सिंह- आज आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें. व्यापार-व्यवसाय में अपने सहयोगी पार्टनर्स से सावधान रहें, नहीं तो आपका काम बिगड़ सकता है. कोई नया लेन-देन आज न करें, वाहन चलाते समय सावधानी बरतें.

कन्या- आज आपका मन अशांत रहेगा, व्यापार-व्यवसाय में नुकसान उठाना पड़ सकता है. कोई बड़ा काम आपके हाथ से निकल सकता है. आज आप पारिवारिक मतभेद में उलझ सकते हैं. आप कोई बड़ा जोखिम आज व्यापार मे न उठाएं. पार्टनर के स्वास्थ्य के कारण चिंतित रह सकते हैं.

तुला- आज का दिन आपका बहुत अच्छा रहने वाला है, आज आप कोई नया बिजनेस शुरू कर सकते हैं. आपनों का साथ मिलेगा, परिवार में मांगलिक कार्यक्रम होंगे. कोई नया वाहन मकान खरीद सकते हैं,किसी धार्मिक यात्रा पर जा सकते हैं.

वृश्चिक- आज आप किसी अपने के स्वास्थ्य को लेकर परेशान रहेंगे, माता-पिता का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है. व्यापार-व्यवसाय में अपने पार्टनर का आज आपको सहयोग मिलेगा. कोई बड़ा काम आज आप शुरू कर सकते हैं काम में रूकावट जरूर आएगी. वाणी पर संयम रखें.

धन- आज के दिन आप वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें. किसी काम का बहुत दिनों से सोच रहे हैं आज वह काम पूरा होगा. न्यायालय पक्ष के काम में आपको नुकसान उठाना पड़ सकता है. वाणी पर संयम रखें, वाद विवाद की स्थिति में अपना बचाव करें.

मकर- सप्ताह में आपको कोई सुखद समाचार मिलेगा, परिवार में मांगलिक कार्यक्रम का योग बनेगा. आप कोई नया निवेश व्यापार-व्यवसाय में कर सकते हैं. पार्टनर का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, पारिवारिक माहौल अच्छा रहेगा.

कुंभ- आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है. आप कोई नया व्यवसाय शुरू कर सकते हैं या व्यापार में कोई बड़ा परिवर्तन कर सकते हैं. कार्यक्षेत्र में पार्टनर का अच्छा सहयोग मिलने से कार्यक्षेत्र में लाभ होगा. परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा.

मीन- इस सप्ताह स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा. आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है. आप परिवार के किसी सदस्य के कारण परेशानी में पड़ सकते हैं. संतान की चिंता बनी रहेगी, व्यापार-व्यवसाय में सहयोगी से मतभेद बढ़ सकते है, आज आप किसी नए काम के लिए विचार कर सकते हैं. पारिवारिक विवाद से दूर रहें.

आपका सप्ताह शुभ हो, विदर्भ स्वाभिमान यही कामना करता है.

सेवा, भक्ति,विनम्रता के त्रिवेणी संगम हैं पटेरिया दम्पति

अन्नदान,गरीबों की मदद में रहता है सदा योगदान

अमरावती- जीवन में धन-दौलत येन-केन प्रकारेण कोई भी कमा सकता है. लेकिन सब कुछ होने के बाद भी स्वयं को सेवा में झोंकने का जज्बा बहुत कम लोगों में होता है. वह दम्पति निश्चित ही सबसे आदर्श दम्पति होते हैं, जहां दोनों का विचार एक होता है और सेवाभाव के साथ ही विनम्रता का भाव भी एक जैसे होता है. शहर के प्रतिष्ठित नागरिक, न्यू गणेश कॉलोनी निवासी हेमंतकुमार पटेरिया और सौ. अनुराधा पटेरिया भी ऐसे ही दम्पति हैं, जिनका जीवन सदा अच्छे कार्यों के लिए समर्पित हैं. वह कभी सेवाभाव को बताते नहीं हैं. लेकिन करीब से जानने वाले यह बताते हैं कि अन्नदान, गरीब छात्रों की मदद के साथ ही समुचित मार्गदर्शन करने का काम पटेरिया परिवार सदा करता है.

स्वभाव में जहां दोनों के विनम्रता है, वहीं दूसरी ओर हेमंतकुमार पटेरिया बड़े पद पर कार्य करने के बाद भी उनकी विनम्रता किसी कोभी प्रभावित करती है. वह कहते हैं कि माता-पिता के आदर्श संस्कारों के साथ ही परमात्मा की सदैव कृपा रही है, ऐसे में अपने स्तर पर अगर संभव होता है तो समाज के लिए कुछ करने का प्रयास करतेहैं. मानव सेवा को ईश्वर सेवा मानने वाले पटेरिया दम्पति का अन्नदान पर अधिक जोर रहता है. उनके मुताबिक यह सबसे पुण्य का कार्य होता है. ऐसे में अन्नदान के लिए सदा हरसंभव मदद देने का प्रयास रहता है. बेटा और बहू भी माता-पिता के आदर्श विचारों पर चलते हुए हरसंभव योगदान देने का प्रयास करते हैं. दोनों का मानना है कि सच्ची सफलता केवल धन कमाने में नहीं, बल्कि लोगों के जीवन में खुशियाँ बाँटने में है.ज्ञान शांति उपवन ओल्डएज होम में कुछ महीने पहले बुजुर्गों के लिए भी कार्यक्रम लिया था. विदर्भ स्वाभिमान परिवार पटेरिया दम्पति के स्वस्थ जीवन की कामना करता है.

ज़ीवन कीदिशा और दशा बदल देते हैं गुरूवर्य

साक्षात्कार में समाजसेवी लप्पीभैया जाजोदिया ने कहा

जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदलने की ताकत गुरू रखते हैं. यही कारण है कि गुरू का स्थान परमात्मा के तुल्य तथा कई मौकों पर प्रभु से भी बड़ा बताया गया है. जीवन में सच्चे और आदर्श गुरू भाग्य से मिलते हैं. इस आशय की बात सुख्यात समाजसेवी चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया जाजोदिया ने कही. उनके मुताबिक गुरू का जिसे सानिध्य मिल जाता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है. इस बारे में साक्षात्कार प्रस्तुत है.

प्रश्नः आपके जीवन में गुरु का क्या महत्व है?

उत्तर-मेरे लिए गुरु केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कार और आत्मजागृति का प्रकाश हैं. गुरु वह शक्ति हैं जो अज्ञान के अंधकार को दूर कर जीवन को सही दिशा देती है. माता-पिता हमें जन्म देते हैं, लेकिन गुरु हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं.

प्रश्नः गुरु और ईश्वर में किसे श्रेष्ठ मानते हैं?

उत्तर- भारतीय संस्कृति में कहा गया है 'गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय. बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय.' गुरु ही हमें ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं. इसलिए गुरु का स्थान अत्यंत ऊँचा माना गया है.

प्रश्नः एक सच्चे गुरु की पहचान क्या है?

उत्तर- सच्चा गुरु वह है जो अपने आचरण से प्रेरणा दे, सत्य, सेवा, करुणा और मानवता का संदेश दे तथा शिष्य के भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानकर उसका विकास करे. गुरु कभी शिष्य को अपने ऊपर निर्भर नहीं बनाते, बल्कि उसे आत्मनिर्भर और विवेकवान बनाते हैं. मेरे जीवन में कई गुरूओं का मुझे आशिर्वाद प्राप्त है. जिनके सानिध्य में रहने से मैने स्वयं यह अनुभव किया है कि बिना गुरू के जीवन की दशा तथा दिशा दोनों ही नहीं बदल सकती है. यही कारण है कि भारतीय संस्कृति और संस्कारों में गुरू को सदा माता-पिता के साथ ही प्रभु के बराबर का दर्जा दिया गया है.

प्रश्नः गुरु के प्रति शिष्य का कर्तव्य क्या होना चाहिए?

उत्तर-शिष्य का सबसे बड़ा कर्तव्य है कि वह गुरु की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारे. केवल सम्मान करना पर्याप्त नहीं, बल्कि उनके बताए मार्ग पर चलना ही सच्ची गुरु-भक्ति है. विनम्रता, अनुशासन और सेवा की भावना ही गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा है. मेरे जीवन में मैंने गुरू के आदर्शों को जीवन में सदा उतारने का काम किया है. यह गुरू की ही कृपा है कि आज आत्मिक संतोष के साथ ही सेवाभावी कामों की प्रेरणा भी गुरू की सीख से मिली है.

प्रश्नः आज के समय में गुरु की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर- आज भौतिक प्रगति तो बहुत है, लेकिन मानसिक शांति और नैतिक मूल्यों का संकट भी बढ़ा है. ऐसे समय में गुरु जीवन को संतुलन, सकारात्मक सोच और सही निर्णय लेने की प्रेरणा देते हैं. गुरु हमें केवल सफल नहीं, बल्कि श्रेष्ठ इंसान बनाते हैं.

प्रश्नः गुरु के लिए आपका संदेश क्या है?

उत्तर- मैं अपने सभी गुरुओं के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ. उनकी शिक्षा, प्रेरणा और आशीर्वाद ने मेरे जीवन को नई दिशा दी है. मेरा विश्वास है कि जिस जीवन में गुरु का मार्गदर्शन होता है, वह जीवन उद्देश्यपूर्ण, सफल और सार्थक बन जाता है.मैं भाग्यशाली हूं, जीवन में मुझे आदर्श गुरू मिले हैं.

जीवन को प्रकाशमान करने का सामर्थ्य केवल गुरू में ही

कमलकिशोर मालानी

विदर्भ स्वाभिमान,23 जुलाई

अमरावती- हर व्यक्ति के जीवन में गुरू का अनन्यसाधारण महत्व है. स्वयं प्रभु श्रीराम, प्रभु श्रीकृष्ण ने भी गुरू की महत्ता को वंदन किया है. इतना ही नहीं तो प्रभु श्रीराम ने तो जीवन में अपनी हर उपलब्धि को गुरूदेव की कृपा से प्राप्त होने की बात कही है. भारतीय संस्कृति और संस्कार महान हैं. इसमें गुरू की महत्ता हर शास्त्र में कही गई है. गुरू की जिस पर कृपा हो जाती है. उस पर प्रभु स्वयं कृपा करते हैं. इस आशय का मत समाजसेवी, युवा स्वाभिमान पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कमलकिशोर मालानी ने किया. गुरूपूर्णिमा के उपलक्ष्य में विदर्भ स्वाभिमान द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले विशेषांक को अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस तरह का प्रयास आज की आवश्यकता है.

शहर ही नहीं तो जिले के दर्जनभर संगठनों में सक्रिय मालानी के मुताबिक गुरु केवल शिक्षा देने वाले नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण के महान शिल्पकार होते हैं. उनका सम्मान केवल शब्दों से नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को जीवन में अपनाकर किया जाना चाहिए। गुरु का सान्निध्य जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य है, क्योंकि गुरु ही अंधकार से प्रकाश और भ्रम से सत्य की ओर ले जाते हैं. जिन पर भी गुरू की कृपा होती है, जीवन में उनका कोई भी काम नहीं रूकता है और सभी काम सहज हो जाते हैं. भक्तिभाव से ओतप्रोत रहने वाले मालानी का पूरा परिवार गुरूदेव तथा प्रभु में अपार विश्वास रखता है. उन्होंने सभी को गुरूपूर्णिमा पर शुभकामनाएँ दी.

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

जाहीर सुचना	10x2	500
जाहीर सुचना	15x2	1000
बच्चों का जन्मदिन	10x2	500
शादी की वर्षगांठ	10x2	500
नाम में बदल	10x2	500
गुमशुदा	10x2	400
श्रध्दांजलि	10x2	500
पुण्यस्मरण	15x2	1000

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी, अमरावती

मो. 9423426199/ 8855019189

सन् 1967 पासून

अमरावती शहरात वाजवी दरात सर्वात जास्त प्लाटस्चे सौदे करणारे एकमेव इस्टेट एजंट

संजय एजंसीज्

टाऊन हॉल समोर, नेहरू मैदान,अमरावती.फोन 2564125,2674048

पार्वतीनगर रोड के कई पथदीप बंद, छाया रहता है घनघोर अंधेरा

विदर्भ स्वाभिमान,23 जुलाई

अमरावती- स्थानीय गड़गड़ेश्वर प्रभाग के व्यस्ततम पार्वती नगर से भातकुली की ओर व्हाया महात्मा फुले कालेज जाने वाला मार्ग जानलेवा बन गया है. इसके अलावा यहां के कई पथदीप बंद रहने से रात्रि में जाते समय लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है. रास्ते की बदहाली केसाथ अंधेरे के कारण कई बार लोग गिरकर घायल हो जाते हैं. क्षेत्र में कई नगर, अपार्टमेंट रहने के कारण यहां से सैकड़ों बच्चें स्कूल जाते हैं. लेकिन रास्ते तथा प्रकाश की असुविधा के कारण कई बार गिरकर चोटिल हुए हैं. इस पर ध्यान देने तथा रास्ता और लाइट सुधारने की मांग क्षेत्रवासियों ने की है.

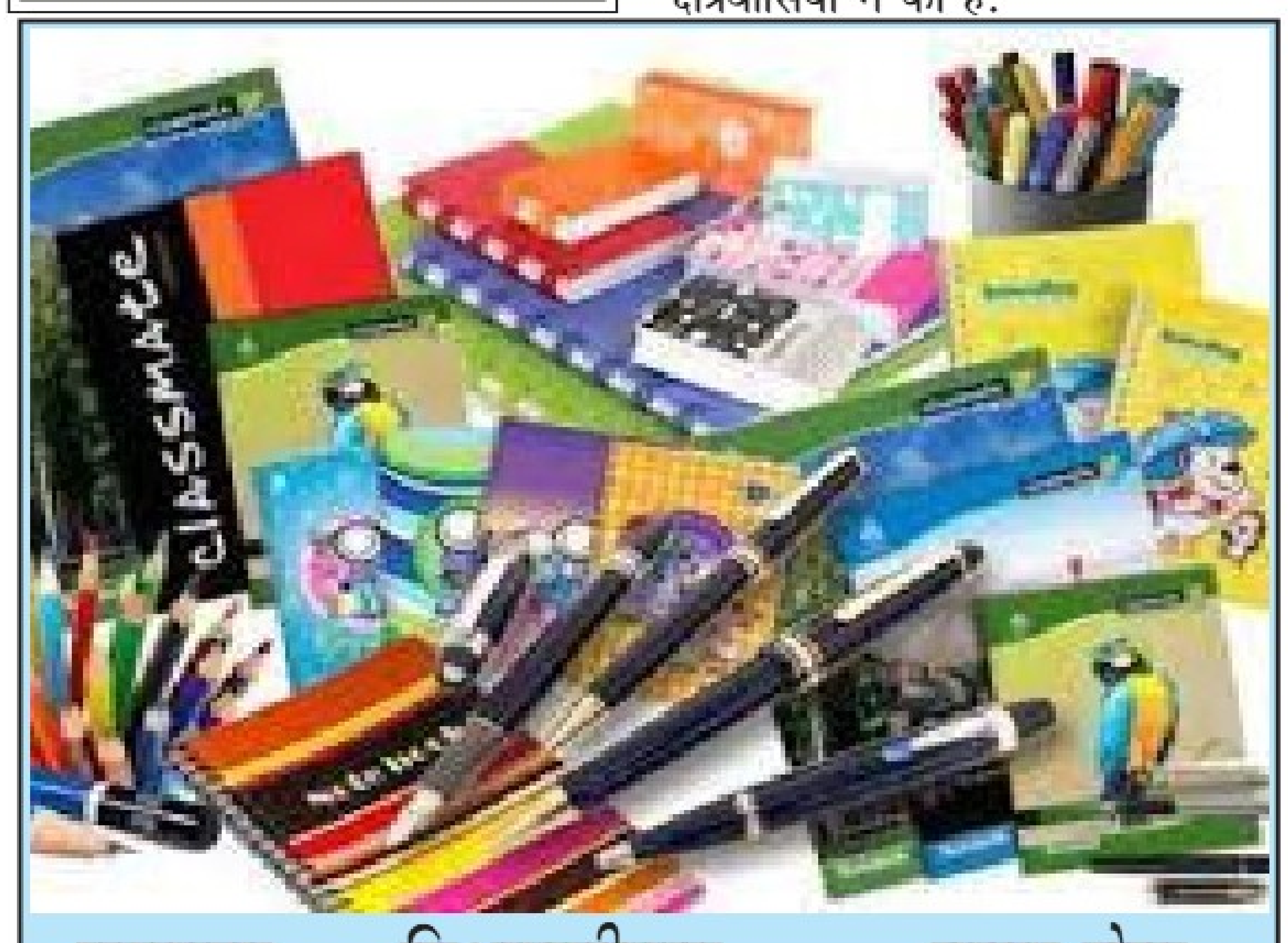

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा

शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.

--संपर्क--

प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक, अमरावती.

विद्यालय ने जीवन संवारा, सक्षम होने पर विद्यालय को हरसंभव जारी है मदद

अभी तक डॉ. नरेंद्र भिवापुरकर अंध विद्यालय को लाखों की मदद

विदर्भ स्वाभिमान, २३ जुलाई

अमरावती– जिस विद्यालय ने मेरा जीवन संवारा उस विद्यालय के प्रति मेरे मन में अपार प्रेम है. यही कारण है कि आर्थिक रूप से मजबूती आने के बाद डॉक्टर नरेंद्र भिवापुरकर अंध विद्यालय को पिछले कई वर्षों से व्यक्तिगत तथा निगम के माध्यम से हर संभव आर्थिक सहयोग करने का प्रयास किया है. कई वर्षों से अंध विद्यालय की मदद के साथ छात्रों की मदद करने का प्रयास किया है. हर पूर्व छात्र को अपने विद्यालय के लिए सक्षम होने पर कुछ न कुछ करने का प्रयास करने की सलाह पूर्व छात्र और ईएसआईसी के सेवानिवृत प्रबंधक रतन कांबले ने दी.

विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत करते हुए रतन कांबले ने बताया कि इस विद्यालय ने उनके जीवन को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. बचपन से ही मेधावी छात्र रतन कांबले एमए बीएड है. तीन पुत्री की उच्च शिक्षा के साथ गरीब बेटियों के विवाह, गरीब छात्रों की मदद के साथ गरीब लोगों की मदद का भी यथासंभव प्रयास करते हैं. उन्होंने बताया कि विद्यालय को वर्ष २०१६ से लगातार मदद कर रहे हैं.

आपको अपने विद्यालय से इतना लगाव क्यों है?

विद्यार्थी: इस विद्यालय ने मुझे केवल शिक्षा ही नहीं दी, बल्कि आत्मविश्वास, सम्मान और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा भी दी। यहाँ के शिक्षक और साथी मुझे कभी अकेला महसूस नहीं होने देते। इसलिए यह विद्यालय मेरे लिए परिवार जैसा है। यही कारण है कि विद्यालय की मदद के लिए सदा प्रयासरत रहता हूं.

आपके जीवन में शिक्षकों की क्या भूमिका रही है?

मेरे गुरुजनों ने हमेशा मुझे आगे बढ़ने का साहस दिया। उन्होंने मुझे ब्रेल लिपि, जीवन कौशल और कठिन परिस्थितियों में भी हार न मानने की सीख दी। आज मैं जो भी हूँ, उनके मार्गदर्शन का परिणाम है। यही कारण है कि अंध विद्यालय की मदद के लिए सदा तत्पर रहता हूं.

विद्यालय की कौन-सी बात आपको सबसे अधिक प्रभावित करती है?

विद्यालय का प्रेम, अपनापन और सहयोग की भावना ने मुझे कभी मेरी दृष्टिबाधा के कारण अलग महसूस नहीं कराया गया। सभी ने मुझे समान अवसर दिए। मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर प्रबंधक पद से सेवानिवृत्ति हुआ हूं.दिव्यांग और सामान्य सभी बच्चों को शिक्षा का महत्व समझा सकूँ और समाज की सेवा करने का सदा प्रयास करता हूं.

विद्यालय के प्रति आपका क्या संदेश है?

मेरा विद्यालय मेरी पहचान है। मैं जीवनभर इसका ऋणी रहूँगा। मेरी कामना है कि यह विद्यालय इसी तरह हजारों विद्यार्थियों के जीवन में ज्ञान, संस्कार और आत्मविश्वास का प्रकाश फैलाता रहे।

अंत में विद्यार्थियों के लिए आपका संदेश?

रतन कांबले के मुताबिक परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, यदि मन में सीखने की लगन और गुरुओं का आशीर्वाद हो तो कोई भी बाधा सफलता का मार्ग नहीं रोक सकती। अपने विद्यालय, गुरुजनों और माता-पिता का सदैव सम्मान करें।

मेधावी छात्र रहे रतन कांबले

दसवीं की परीक्षा में रतन कांबले १९८३ में प्रथम रहे. मुंबई के पुनर्वसन केंद्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए उन्होंने काफी संघर्ष किया और सफल भी रहे. समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित महाविद्यालय से ११वीं से लेकर एम.ए. तथा बी.एड.की उच्चशिक्षा प्राप्त करने के बाद केंद्र सरकार के उपक्रम में नौकरी लगी और वर्तमान में दो बेटियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरी कर रही हैं. जबकि सबसे छोटी बेटी वैद्यकीय शिक्षण के क्षेत्र में अभ्यास कर रही है.

तारता ही नहीं, जीवन संवारता है गुरु का आशीर्वाद

पूज्य पं.शिव गुरु शर्मा का आशिर्वाद वचन

विदर्भ स्वाभिमान,२२ जुलाई

उज्जैन–जीवन में जो गुरु द्वारा बताए गए मार्ग पर चलता है उसका जीवन न केवल सफल होता है बल्कि धन्य हो जाता है. गुरु केवल ज्ञान ही नहीं देते हैं बल्कि उनकी सीख सहित सभी कलाएं देने का प्रयास करते हैं. वह शिष्य भाग्यशाली होता है जिसे आदर्श गुरु मिल जाते हैं. इस आशय का मत मानव सद्भावना जागृति संस्था के प्रमुख एवं जाने माने कथा प्रवक्ता पंडित शिव गुरु शर्मा महाराज ने व्यक्त किया. विदर्भ स्वाभिमान के गुरु पूर्णिमा विशेषांक की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में इसकी जरूरत है.

गुरु भक्ति का प्रसाद तारता है

भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी श्रेष्ठ स्थान दिया गया है, क्योंकि गुरु ही अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। गुरु की सच्ची भक्ति और उनकी कृपा का प्रसाद मनुष्य के जीवन को सही दिशा देता है तथा उसे सांसारिक मोह-माया से ऊपर उठाकर सत्य, सेवा और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।गुरु भक्ति का प्रसाद केवल भौतिक वस्तु नहीं, बल्कि गुरु का आशीर्वाद, ज्ञान, संस्कार और आत्मिक शक्ति है। जो श्रद्धापूर्वक गुरु के बताए मार्ग पर चलता है, उसका जीवन सफल, सार्थक और आनंदमय बन जाता है। गुरु का प्रसाद मन में विश्वास, धैर्य, विनम्रता और आत्मबल का संचार करता है, जिससे जीवन की कठिन से कठिन परिस्थितियों को भी सहजता से पार किया जा सकता है।

संत परंपरा में कहा गया है कि गुरु की कृपा से ही ईश्वर की प्राप्ति संभव होती है। गुरु का प्रसाद मनुष्य को केवल संकटों से ही नहीं उबारता, बल्कि उसके भीतर छिपी दिव्यता को भी जागृत करता है। इसलिए गुरु भक्ति का वास्तविक प्रसाद वही है, जो मनुष्य को मानवता, करुणा, सत्य और धर्म के मार्ग पर अग्रसर करे।

गुरु भक्ति का प्रसाद केवल हाथों में नहीं, हृदय में ग्रहण किया जाता है। यही प्रसाद जीवन को संवारता है, आत्मा को पवित्र करता है और अंततः मनुष्य का कल्याण करता है।

जीवन के प्रकाशपुंज होते हैं गुरु

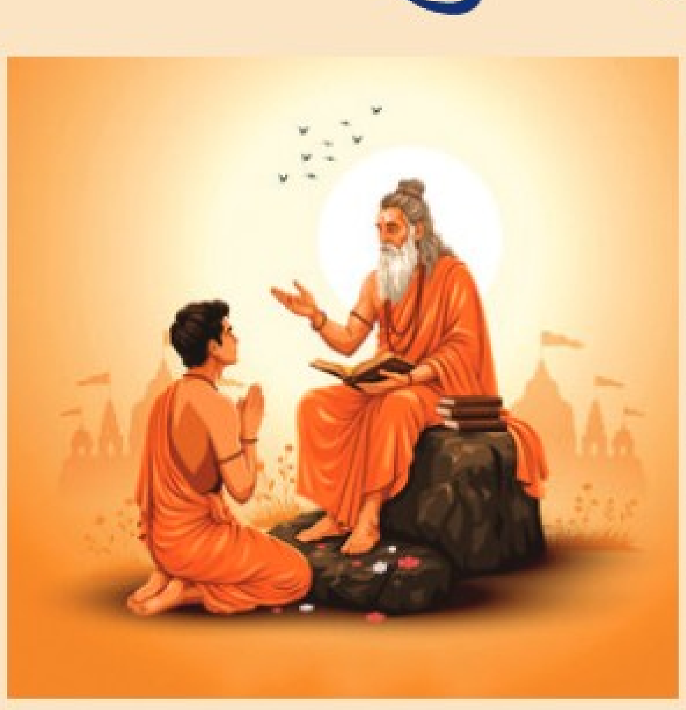

जीवन में गुरु न केवल जीवन संवारता है, बल्कि गुरु का आशीर्वाद मिलने के बाद जीवन की दिशा और दशा दोनों ही बदल जाने की शक्ति होती है. समय के साथ भले ही हर रिश्ते बेईमान हो जाए लेकिन जीवन में गुरु अगर सही मिल जाए तो आपका जीवन धन्य हो जाता है. आज के समय में भी एकमात्र गुरु ही है जिनका महत्व न केवल कायम है बल्कि उनके प्रति अपार सम्मान की भावना रहती है. गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष में जीवन को दिशा देने वाले समस्त गुरुओं को प्रणाम करता हूं और इस पावन पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं.

गुरु केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा दिखाने वाला प्रकाशपुंज होता है। गुरु अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान, विवेक, संस्कार और आत्मविश्वास का दीप प्रज्वलित करता है। माता-पिता हमें जन्म देते हैं, लेकिन गुरु हमें जीवन जीने की कला सिखाते हैं।

प्राचार्य सुधीर महाजन
पोदार इंटरनेशनल स्कूल, इंदौर

गुरु के सान्निध्य में व्यक्ति का व्यक्तित्व निखरता है, चरित्र का निर्माण होता है और जीवन का उद्देश्य स्पष्ट होता है। सच्चा गुरु अपने शिष्य को केवल सफलता ही नहीं, बल्कि सत्य, सेवा, विनम्रता और मानवता का मार्ग भी दिखाता है।भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी श्रेष्ठ स्थान दिया गया है, क्योंकि गुरु ही ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं। इसलिए हमें सदैव अपने गुरु का सम्मान, आदर और उनके बताए हुए मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

गुरु का सम्मान ही ज्ञान का सम्मान है। गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण ही जीवन को सफल, सार्थक और उज्ज्वल बनाता है। आइए, अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करें और उनके आदर्शों को अपने जीवन में अपनाएँ।

माँ कनकेश्वरी देवी के आगामी कथाएं

*२३ से २७ जुलाई २०२६ शिर्डी (महाराष्ट्र)
*२ से ९ अगस्त २०२६ गंगाखेड (महाराष्ट्र)
*२७ से ४ अक्तूबर २०२६ मालसर (गुजरात)
*११ से १९ अक्तूबर २०२६ नवरात्रि महोत्सव इंदौर (मध्य प्रदेश)
*१२ से १९ नवम्बर २०२६ सिध्धपुर (गुजरात)
*३० नवम्बर से ८ दिसंबर २०२६ लींमडी (गुजरात)
*१५ से २३ दिसंबर २०२६ खोखरा हनुमान धाम गुजरात (जगदगुरु राघवाचार्य की कथा)
*३ से ११ जनवरी..२०२७ अहमदाबाद सायन्ससीटी (गुजरात)
*७ से १५ फरवरी २०२७ नडीयाद (गुजरात)
*२५ मार्च से १ अप्रैल २०२७ वैष्णोदेवी..(जम्मू-कश्मीर
*७ से २० अप्रैल २०२७(आश्रम में पू.शंकराचार्य जी महाराज का निवास)
*२३ अप्रैल से १ मइ२०२७ राजडा टेकरी कच्छ (गुजरात
*४ से १० मइ २०२७ राजकोट(गुजरात)
*१३ से २० मइ २०२७ कन्याकुमारी (तमिलनाडु)
*२२ से २९ मइ २०२७ रामेश्वर (तमिलनाडु)

भगवान के समकक्ष होते हैं गुरू

प्राचार्य संजय शिरभाते
अमरावती

भारतीय शास्त्रों में गुरू को भगवान से भी बड़ा बताया गया है. यहां तक कहा गया है कि प्रभु अवतार लेने के बाद अगर गुरू नहीं करें तो उनका भी कल्याण असंभव है. श्रीरामचरितमानस में भी तुलसीदासजी ने स्पष्ट किया है कि अगर साक्षात भगवान शंकर भी मानव रूप में पैदा होते हैं तो बिना गुरू के उनका भी कल्याण नहीं हो सकता है. विभिन्न शास्त्रों ने गुरू के बारे में क्या कहा है, इसे प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है.

गुरु को ज्ञान का मार्गदर्शक माना गया है. शास्त्रों के अनुसार गुरु अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करते हैं.

गुरु का स्थान ईश्वर के समान बताया गया है. भारतीय परंपरा में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के स्वरूप के रूप में सम्मान दिया गया है. गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः का भाव गुरु की महानता को दर्शाता है. शास्त्रों में गुरु को केवल शिक्षा देने वाला नहीं, बल्कि चरित्र, संस्कार और जीवन मूल्यों का निर्माण करने वाला माना गया है. उपनिषदों में गुरु के माध्यम से आत्मज्ञान और सत्य की प्राप्ति का मार्ग बताया गया है.गुरु शिष्य के गुणों को विकसित कर उसे श्रेष्ठ मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं. महाभारत में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व बताया गया है. द्रोणाचार्य और अर्जुन जैसे उदाहरण गुरु के मार्गदर्शन और शिष्य की साधना को दर्शाते हैं। रामायण में गुरु का सम्मान प्रभु श्रीराम ने दुनिया के समक्ष रखा है. भगवान श्रीराम ने भी गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र से शिक्षा प्राप्त कर गुरु की मर्यादा और महत्व को स्थापित किया. शास्त्रों में गुरु को व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास का आधार माना गया है. भारतीय संस्कृति में गुरु सेवा और गुरु सम्मान को श्रेष्ठ गुणों में शामिल किया गया है.

गुरु जीवन के अंधकार को दूर करने वाले होते हैं. गुरु केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं देते, बल्कि विवेक, धैर्य और सही निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करते हैं. जीवन में प्रकाश लाने का काम केवल गुरू करते हैं. गुरू की महत्ता हजारों वर्षों से चली आ रही है. आज भी बरकरार है. गुरू ही आदर्श संस्कार देते हैं, जो जीवन संवारने का काम करता है.

गुरु भक्ति है कामयाबी की चाबी

दिपेंद्र मिश्रा
अमरावती

भारतीय संस्कृति और गुरू भक्ति की महिमा का बखान समूचे विश्व में किया जाता है. जीवन में गुरू का महत्व माता-पिता के समकक्ष बताया गया है. भारतीय संस्कृति और शास्त्रों में गुरु को जीवन का मार्गदर्शक माना गया है. गुरु केवल ज्ञान देने वाले शिक्षक नहीं होते, बल्कि वे शिष्य को सही दिशा, अनुशासन और सफलता का मार्ग दिखाते हैं. गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण को गुरु भक्ति कहा जाता है. जिसे जीवन में अच्छा गुरू मिल जाता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है.

गुरु भक्ति का अर्थ केवल गुरु की पूजा करना नहीं, बल्कि उनके बताए हुए मार्ग पर चलना, उनके ज्ञान को जीवन में उतारना और मेहनत के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना है. जिस शिष्य में गुरु के प्रति सम्मान और सीखने की भावना होती है, वह कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का साहस रखता है. वह शिष्य हर स्थिति में जीतता है. किसी भी प्रकार की विपरीत स्थिति उसे लक्ष्य से नहीं डिगा सकती है. शास्त्रों में गुरु को अज्ञान का अंधकार दूर करने वाला बताया गया है. गुरु अपने अनुभव से शिष्य की गलतियों को सुधारते हैं और उसकी प्रतिभा को निखारते हैं. अर्जुन की सफलता के पीछे गुरु द्रोणाचार्य का मार्गदर्शन और श्रीराम के जीवन में गुरु वशिष्ठ एवं विश्वामित्र का मार्गदर्शन इसका उदाहरण है. गुरु की सीख, शिष्य की मेहनत और लक्ष्य के प्रति समर्पण के मेल से सफलता का मार्ग आसान बनता है. इसलिए कहा जाता है कि गुरु भक्ति सफलता की चाबी है, क्योंकि गुरु का मार्गदर्शन जीवन को सही दिशा प्रदान करता है. ऐसे हजारों उदाहरण मिल जाएंगे जब गुरू के आशिर्वाद ने बदमाश से बदमाश भी न केवल सुधर जाता है बल्कि समाज के समक्ष आदर्श उदाहरण बनकर लोगों के जीवन को संवारता है.

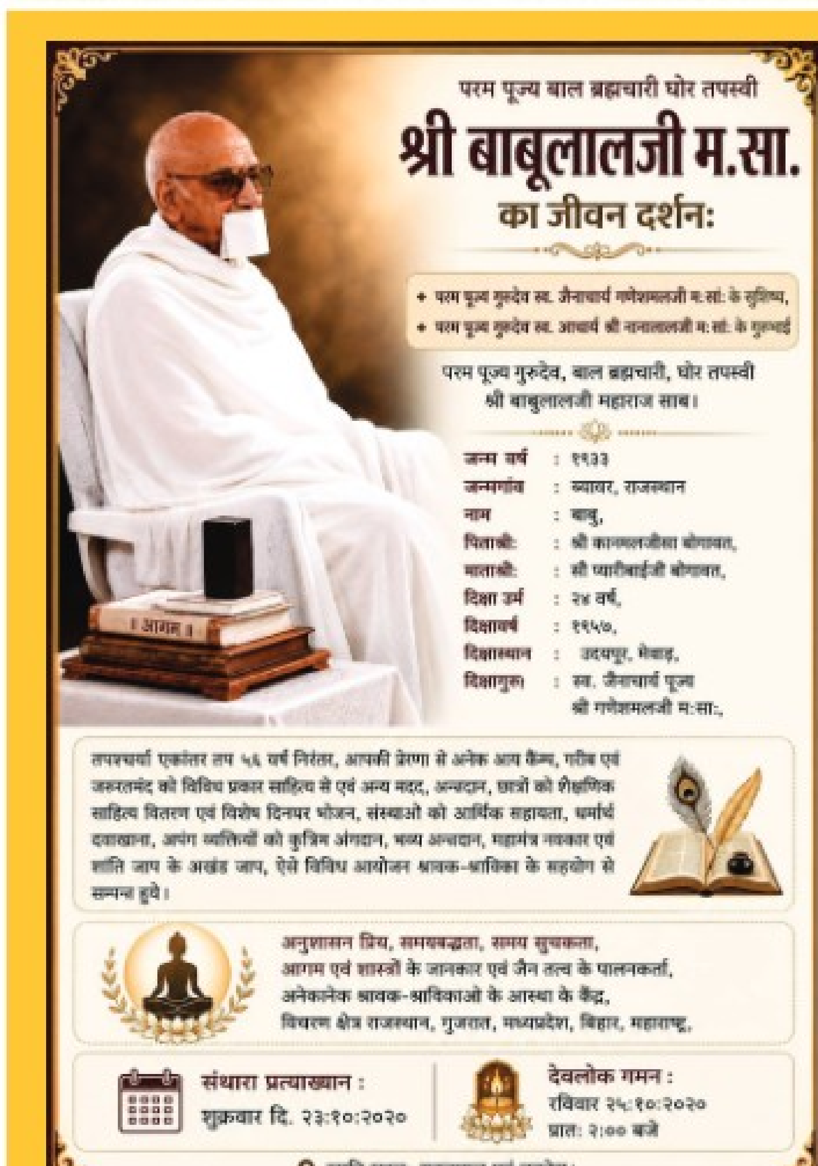

मानवसेवी दो महान मुनि बाबूलाल म.सा. एवं आचार्य आनंदऋषिजी महाराज का परिचय

जैन समाज में सेवाभाव की परंपरा की सराहना सभी करतें है. ऐसे में परमपुज बाल ब्रह्मचारी, घोर तपस्वी श्री बाबूलालजी म.सा. का जीवनदर्शन, अनुशासन प्रियता, समयबध्दता और सेवाभाव प्रेरणादायी रहा वहीं परमपुज्य आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज ने अपना पूरा जीवन मानव कल्याण, धर्म प्रचार और सेवा के लिए समर्पित कर दिया. १३ वर्ष की आयु में दिक्षा लेनेवाले आनंदऋषिजी महाराज संस्कृत, प्राकृत सहित ११ भाषाओं के ज्ञाता थे. दोनों ही मुनियों ने अपने जीवन काल में मानव सेवा गरीब एवं जरुरतमंदो की मदद, अन्नदान, छात्रों को शैक्षिक साहित्य वितरण जैसे सैकडो उपक्रम चलाकर मानवता की सेवा ही सबसे बडी सेवा रहने का संदेश दिया. गुरु पूर्णिमा पर दोनों मुनियों को शत शत नमनः